

30.00

# मारयाम

बच्चों के झगड़े  
मुस्लिम साइंटिस्ट  
शादी के बाद के झगड  
इमाम अली रज़ा<sup>अ०</sup>

सच्चाई

शादी की रस्में 32  
फ़ेस-गडिंग





# मरयम

का एक साल पूरा होने के मौके पर हम अपने  
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आ रहे हैं

## खुशियों की सौगात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 खुशानसीबों को मिलेंगे खूबसूरत  
ज्वेलरी सेट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतज़ार कीजिए अपनी बारी का।

इस महीने जिन 5 खुशानसीबों को  
मरयम की तरफ से खूबसूरत तोहफे दिये जा रहे हैं  
उनके नाम यह हैं:

Mr. Rashid Masood, Noida  
Subscription ID: 00341

Mr. Shahid Ali Abdi, Lucknow  
Subscription ID: 00303

Ms. Sabiha Wasti, Lucknow  
Subscription ID: 00168

Mr. Noorul Hasan Baba, Lucknow  
Subscription ID: 00176

Mr. Tabassum Zehra, Tehseeldar  
Tumkur, Karnataka, Subscription ID: 00073





الله الرحمن الرحيم

October  
2011

**Editor**

M. Hasan Naqvi

**Editorial Board**

M. Fayyaz Baqir  
Akhtar Abbas Jaun  
Qamar Mehdi  
Ali Zafar Zaidi

**Managing Editor**

Abbas Asghar Shabrez

**Executive Editor**

Fasahat Husain

**Assist. Exec. Editor**

M. Aqeel Zaidi

**Contributors**

Imtiyaz Abbas Rizwan  
Azmi Rizvi  
Batool Azra Fatima  
M. Mohsin Zaidi  
Tauseef Qambar

**Graphic Designer**



Siraj Abidi  
9839099435

**Typist**

S. Sufyan Ahmad

Monthly Magazine

# मरयाम

## इस महीने आप पढ़ेंगी...

शादी के बाद के झगड़े	5
फ़ेस-रीडिंग	7
गैबत	8
शुक्रिया	10
हर मसले का हल	12
बच्चों के झगड़े	14
दुनियादारी-दीनदारी	18
हुस्न और सेहत	20
इमाम अली रज़ा <sup>म०</sup>	22
अचारी-सब्जी समोसे (डिब्बा)	24
मुस्लिम साइंटिस्ट	25
मुश्किलों का हल (तफ़्सीर)	28
इमरजेंसी में बच्चे की जान कैसे बचाएं	30
सच्चाई (अख़लाक)	32
दूसरे 7 साल	34
यूरोप तो हम से भी ज़्यादा परेशान है	35
ताज़ा फूल (कहानी)	37
मां की अज़मत (नज़्म)	40
मेरी कामयाबी में	
साथियों का हाथ: बिल गेट्स	41

## खुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान है...

पिछले दिनों उत्तर भारत के एक बहुत बड़े हिस्से को ज़लजले ने हिला और दहला कर रख दिया था जिसकी वजह से काफ़ी जानी व माली नुक़सान हुआ था। और जिसके बाद यह भी ख़बरें आने लगी हैं कि अगले आने वाले वक़्त में अभी और भी ज़लजले आएंगे जिन से बहुत बड़े पैमाने पर नुक़सान होने का ख़तरा है।

कुरआने मजीद के सूरए रूम की आयत न०. 41 में है, “लोगों के आमाल की वजह से फ़साद खुशकी और तरी हर जगह पर छा गया है ताकि खुदा उनके कुछ आमाल का मज़ा चखा दे। तो शायद यह लोग पलट कर रास्ते पर आ जाएं।”

इस आयत की उलमा ने मासूम इमामों के मुताबिक़ जो तफ़्सीर बयान की है वह यह है कि हम जो कुछ अच्छा-बुरा करते हैं उसका हमारे युनिवर्स पर सीधा असर पड़ता है जिससे नेचर में अच्छे या बुरे बदलाव आते रहते हैं।

दुनिया में आज जितनी बुराईयां और गुनाहों का बाज़ार गर्म है, इस आयत की रोशनी में ज़ाहिर है कि उनका असर दुनिया पर पड़ना ही पड़ना है जिसे हम एक नेचरल डिज़ास्टर समझकर किनारे कर देते हैं। तफ़्सीरों में ज़लजलों, तूफ़ानों, सूखे, बीमारियों और दूसरे नेचुरल डिज़ास्टर्स की एक वजह हमारे गुनाहों को भी बताया है।

हो सकता है कि दुनिया वाले हमारे इस नज़रिए पर हंसे लेकिन एक मुसलमान होने और कुरआन पर ईमान रखने के नाते हमें इस आयत पर ग़ौर करना होगा और जितना हो सके उतना गुनाहों को कम करना होगा। सच्ची बात यह है कि हमारे एक-एक अमल का इस दुनिया पर असर पड़ता है।

‘मरयम’ में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नहीं है।

‘मरयम’ में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और ‘मरयम’ में छपे लेख और तस्वीरें ‘मरयम’ की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले ‘मरयम’ से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। ‘मरयम’ में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक ‘मरयम’ के लिए आने वाले कंटेंट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer, publisher & Proprietor S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006  
email: maryammonthly@gmail.com



# शादी के बाद झगड़े

■ उज्जमा नक्वी

पिछले इश्यूज़ में हमने बताया था कि एक अच्छा घर बसाने के लिए एक अच्छी बीवी की ज़रूरत है ताकि वह शादी के बाद आकर एक मकान को घर में तबदील कर सके। लेकिन ज्वाइंट फैमिली में आम तौर पर ऐसे मसले पैदा हो जाते हैं जिनके लिए कहा जाता है कि अच्छे ख़ासे बसे-बसाए घर को बहू ने आकर उजाड़ दिया, बल्कि कभी-कभी तो ज्वाइंट फैमिली न होते हुए भी यह मसले पैदा होते हैं।

जबकि सबसे बड़ी वजह है सास, बहू, नन्द,

भावज, देवरानी और जिठानी के इख्तेलाफ़। आमतौर पर यह इख्तेलाफ़ और झगड़े छोटी-छोटी बातों से शुरू होते हैं मगर कभी-कभी इनका अंजाम इतना ख़तरनाक हो जाता है कि तलाक़ की नौबत भी आ जाती है या कभी मां-बेटे या भाई-बहन में जुदाई की वजह भी बन जाता है। जिसके नतीजे में या तो दो ज़िंदगियां बर्बाद हो जाती हैं या बसा-बसाया घर उजड़ जाता है। कभी आपने ग़ौर किया है कि इसकी असली वजह क्या है?

इस इख्तेलाफ़ की कम से कम यह तीन वजहें हो सकती हैं :

- 1- कल्चर का फ़र्क़
- 2- खुद पसंदी (ईगो)
- 3- शहरी या नसली तात्सुब

## कल्चर का फ़र्क़

शादी का मतलब यही है कि दो अलग फैमिली के लोग मिलकर एक फैमिली

में बदल जाते हैं और ज़ाहिर है कि जब दो अलग फैमिली हैं तो ज़्यादातर अलग ख़ानदान या अलग जगहों से होती हैं, जिसके नतीजे में उनके बीच बात करने से लेकर उठने-बैठने, खाने-पीने वगैरा हर चीज़ के तरीक़े में फ़र्क़ हो सकता है।

एक समझदार इंसान के लिए इस जगह पर यह अहम नहीं है कि काम किस तरह हो बल्कि यह अहम है कि काम कैसा हुआ। मगर आम तौर से यह चीज़ें ईशू बन जाती हैं कि 'यह कैसे किया और हमारे यहाँ तो ऐसा होता है...' वगैरा।

इससे बचने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि सब एक दूसरे के काम के तरीक़े का एहतेराम करें, न कि किसी पर अपने तरीक़े को थोपने की कोशिश करें।

अगर कभी लड़की के साथ बाईचांस ऐसा हो जाए कि उसको सुस्त्राल में अपने तरीक़े पर चलने की आज़ादी न मिले तो उसकी अक्लमंदी इसी में है कि छोटी-मोटी चीज़ों पर ज़िंदगी के अहम मक़सद को कुर्बान न करे बल्कि कोशिश करे कि जहां तक हो सके अपने कल्चर को बदल दे ताकि ज़िंदगी का अहम मक़सद हाथ से न जाने जाए और माहौल पुरसुकून रहे। असल में यह उसकी कुर्बानी है जो माहौल को पुरसुकून बनाने के लिए दी जा रही है।



### खुद पसंदी (ईगो)

खुद पसंदी समाज में फैली हुई एक बहुत बड़ी और इंसान को बर्बाद कर देने की हद तक बुरी अख़लाकी बीमारी है। इसकी बुनियाद जिहालत पर होती है। उलमा ने इससे बचने पर बहुत ज़्यादा जोर दिया है क्योंकि यह बीमारी जिसमें पैदा हो जाए उसकी बर्बादी के सारे रास्ते खुल जाते हैं।

इसकी पहचान यह है कि जिसमें यह बीमारी पैदा होती है वह अपने को सबसे अच्छा और हर तरह के ऐब, कमी और नक्स से पाक समझने लगता है और अपने मुकाबले में दूसरों को बहुत छोटा, कमतर और नाकिस समझता है।

खुदावंदे आलम फ़रमाता है, “क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने नफ़स की पाकीज़गी का इज़हार करते हैं... हालांकि अल्लाह जिसको चाहता है पाकीज़ा बनाता है और बंदों पर धागे के बराबर भी जुल्म नहीं होता।”<sup>(1)</sup>

यानी जिसमें पाकीज़ा बनने की सलाहियत होती है खुदा उसको पाकीज़ा बना देता है और यह सलाहियत बंदे को खुद से अपने अंदर पैदा करनी पड़ती है।

रसूले अकरम<sup>ﷺ</sup> फ़रमाते हैं, “जो यह कहे कि मैं सबसे अच्छा हूँ तो वही सबसे बुरा है, और जो यह कहे कि मैं तो जन्नत में जाऊंगा ही, तो वह जहन्नम में जाएगा।”<sup>(2)</sup>

हज़रत अली<sup>ؓ</sup> फ़रमाते हैं, “सबसे बुरा सच यह है कि इंसान खुद अपनी तारीफ़ करे।”<sup>(3)</sup>

यानी अगर इंसान यह जानता है कि उसमें कोई एक या बहुत सी अच्छाईयां पाई जाती हैं तब

भी उसको जताना सही नहीं है।

जब दो घराने शादी के रिश्ते के ज़रिए आपस में मिलते हैं तो जिसमें यह बीमारी पाई जाती है वह अपने को सबसे बेहतर और दूसरों को अपने मुकाबले में गिरा हुआ समझने लगता है और हर मौक़े पर इसका इज़हार भी करता रहता है।

यहां तक कि अगर मियां-बीवी में से खुदा न-ख़्वास्ता किसी में यह बीमारी हो तो सामने वाले को या तो बेहद बर्दाश्त करना पड़ता है या फिर दोनों को बहुत बड़े इख़्तेलाफ़ का सामना करना पड़ सकता है। अगर कहीं दोनों में यह बीमारी हुई

तो इसका अंजाम तो फिर तलाक़ ही है।

### शहरी या नसली तास्सुब

इंसान का नेचर यह है कि वह अपने आप को परफ़ेक्ट, हुनरमंद और टेलेंटेड देखना पसंद करता है, अगर उसमें आगे बढ़ने की सलाहियतें हों तो क्या कहना, नहीं तो वह किसी भी टेलेंट और हुनर तक पहुंचने के लिए बैसाखियां ढूंढना शुरू कर देता है और हर उस चीज़ को संहारा बनाने लगता है जो उसको परफ़ेक्ट तो नहीं मगर समाज को टुकड़े-टुकड़े ज़रूर कर देती है। जैसे हम इस ख़ानदान से हैं, हमारी नस्ल यह है, हम इस शहर के रहने वाले हैं, वगैरा।

शादी के बाद अगर लड़की अपने सुस्साल वालों को या सुस्साल वाले अपनी बहू को इस तरह की बातों के ज़रिए छोटा और गिरा हुआ साबित करने लगते हैं तो यहीं से इख़्तेलाफ़ शुरू हो जाता है जो बहुत भयानक रूप ले लेता है।

इसलिए इन तीनों हालतों में अक्लमंदी यही है कि जहां तक हो सके झगड़े से बचा जाए क्योंकि इंसान की जिंदगी का मक़सद यह नहीं है कि अपने को दूसरे पर बड़ा साबित कर दे बल्कि मक़सद यह है कि अपने अंदर वह क्वालिटीज़ पैदा करे जिनसे खुद बख़ुद बड़ा बन जाए।

और किसी के बड़े होने की सबसे अच्छी पहचान यही है कि वह दूसरों की इज़्ज़त, एहतेराम और उनके हक़ों का ध्यान रखे ताकि घर से लेकर क़ौम व समाज तक के सारे इख़्तेलाफ़ों से बचा रहे, वरना घर और समाज दोनों टुकड़े-टुकड़े होकर तबाह व बर्बाद हो जाएंगे।

जो शादी बड़े इन्तिज़ाम और एहतेमाम के साथ हुई है उसको उतने ही एहतेमाम से महफूज़ व मज़बूत भी रखिए...

1- निसा/49, 2- बिहार, 70/397, 3-मीज़ानुल हिकमा, 9/90



पढ़ना है तो इंसान को पढ़ने का हुनर सीख  
हर चेहरे पे लिखा है किताबों से ज़्यादा

# फ़ेस रीडिंग



सै. आले हाशिम रिज़वी  
यूनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

यह बात बिल्कुल सही है कि इंसान का चेहरा एक किताब की ही तरह होता है। जिस पर उसके दिल और दिमाग का हाल लिखा होता है। खुशी, ग़म, गुस्से, नाराज़गी, नफ़रत और मोहब्बत जैसे तमाम एहसास चेहरे से ज़ाहिर हो जाते हैं। अब ये पढ़ने वाले के ऊपर है कि वह किस हद तक और कितना सही किसी का चेहरा पढ़ पाता है। इस इल्म और हुनर को फ़ेस-रीडिंग कहा जाता है। यूरोपियन किताबों में पहली बार फ़ेस रीडिंग के बारे में सिस्टमेटिक लिट्रेचर, अरस्तु का मिलता है जिसने इंसान के चेहरे और जिस्म

के फ़ीचर्स के ज़रिए उसकी शख्सियत के बारे में जानकारी हासिल करने के लिए पूरी थ्योरी पेश की है।

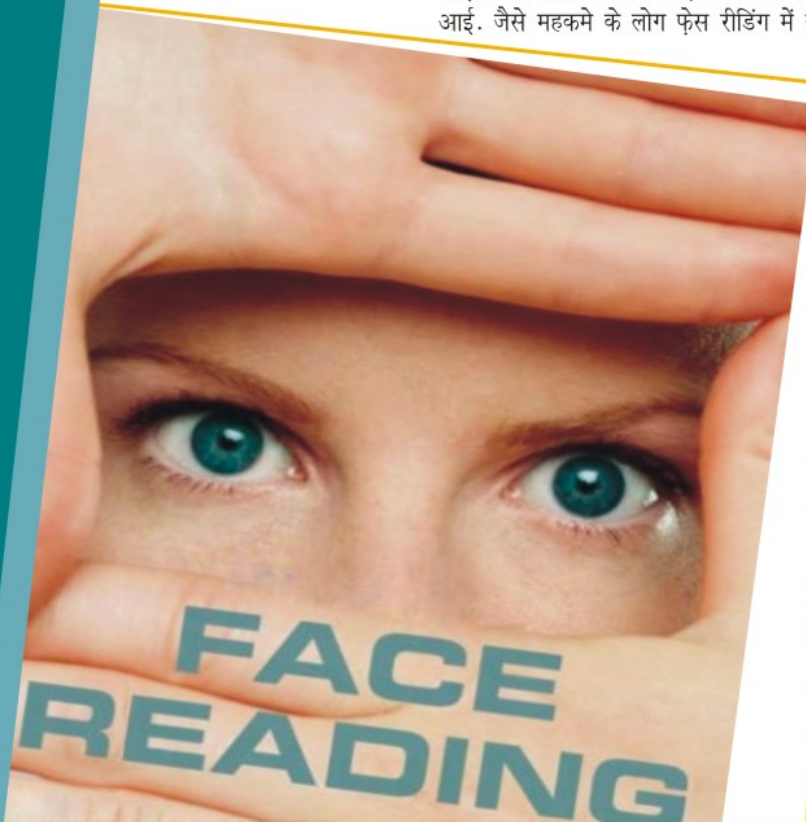
अरस्तु ने अपनी थ्योरी में चेहरे के अलावा बालों का स्टाइल, जिस्म की बनावट और बोलने का अंदाज़ भी शामिल किया है। इस बात को सभी ने माना है कि फ़ेस रीडिंग के ज़रिए किसी भी इंसान की शख्सियत के बहुत से पहलू जाने और समझे जा सकते हैं। अब तो फ़ेस रीडिंग के साथ इंसान की बॉडी-लैंग्वेज को समझने के तरीके को साइंस ने 'फ़िज़ियोगनोमी' नाम भी दे दिया है जो फ़िज़ियोलोजी की एक ब्रांच मान ली गई है। इस ब्रांच का इस्तेमाल आजकल काफी बढ़ गया है।

फ़िज़ियोगनोमी का सबसे ज़्यादा इस्तेमाल मुजरिमों की जांच-पड़ताल में होता है। चेहरे के हाव-भाव और बॉडी लैंग्वेज के ज़रिए इस टेक्निक के जानकार ये जानने की कोशिश करते हैं कि सामने वाला शख्स सच बोल रहा है या गुलत बयानी कर रहा है। फ़ेस रीडिंग इस मामले में काफी मदद करती है। सी.आई.डी. और सी.बी.आई. जैसे महकमे के लोग फ़ेस रीडिंग में बहुत

माहिर होते हैं। अब तो बड़ी-बड़ी कंपनियों में किसी नए मुलाज़िम को रखने से पहले इन्टरव्यू के दौरान फ़ेस रीडिंग में माहिर लोगों को भी बैठाया जाता है, ताकि वह इन्टरव्यू देने वाले शख्स को सही तरीके से जांच-परख सकें।

आइए अब देखते हैं कि फ़ेस रीडिंग जैसे अहम मामले में इस्लाम ने क्या रौशनी डाली है। मरयम के रीडर्स को ये जानकर खुशी होगी कि जितनी परफेक्ट फ़ेस रीडिंग हमारे नबियों और इमामों ने पेश की उतनी आज तक बड़े-बड़े माहिर भी पेश नहीं कर सके हैं। शेख़ सुदूक की किताब 'इल-लुशशराय' में दर्ज एक वाक़ेए के मुताबिक़ एक बार एक शख्स छठे इमाम, जाफ़र सादिक<sup>०</sup> के पास आया। उसने इमाम से कहा कि मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। इमाम ने उसके चेहरे पर नज़र डाली और फिर बोले कि मैं जानता हूँ कि तुम क्या पूछना चाहते हो? उसने हैरान होकर पूछा कि आपको कैसे पता चला कि मैं क्या पूछना चाहता हूँ? इमाम जाफ़र सादिक<sup>०</sup> ने फ़रमाया कि तुम्हारी ज़ाहिरी निशानियों से। इस वाक़ेए में इमाम ने फ़ेस रीडिंग की तरफ़ साफ़ इशारा किया है। ऐसे बहुत से वाक़ेए मिलते हैं जिनमें नबियों और इमामों ने सामने वाले के सिर्फ़ चेहरे को देखकर उसके दिल-व-दिमाग़ की पूरी कैफ़ियत और हालत समझ ली है।

एक बूढ़ी औरत के ज़रिए जब कुछ शरारती लोगों ने हज़रत अली<sup>०</sup> से उसके जवान और जिंदा बेटे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने के लिए कहा था तो इमाम उनके चेहरे देखकर ही उनकी मक्कारी समझ गए थे। फ़ेस रीडिंग का इल्म इस्लाम की ही देन है। लेकिन बड़े से बड़े जानकार के लिए रसूल और इमाम की तरह 100% सही फ़ेस रीडिंग करना नामुमकिन है क्योंकि इसके लिए हुनर के साथ जिस रूहानी ताक़त की भी ज़रूरत होती है वह तो सिर्फ़ नबियों और इमामों ही के पास थी। उनके सामने किसी भी इंसान के लिए अपने दिल व दिमाग़ का हाल छुपाना मुमकिन नहीं हो पाता था। वैसे इमाम के पास खुदा की दी हुई ऐसी ताक़त भी थी जिसके ज़रिए वह इंसान के दिल का हाल ही नहीं बल्कि उसकी पूरी हिस्ट्री जान लेते थे। ●







# الحسين عليه السلام ناخبرين

## गैबत

■ नेलोफर अम्बर

रसूल अकरम<sup>०</sup> और उनके जानशीनों ने अपनी हदीसों में बताया था कि 'मेहदी' उनकी नस्ल से होंगे जो जुल्म व सितम की जगह अदल व इंसाफ़ को फैलाएंगे। यह एक ऐसी चीज़ थी जिसकी वजह से उस दौर के ज़ालिम बादशाहों के दिल में यह डर बैठा हुआ था कि अगर मेहदी इस दुनिया में आ गए तो वह हमारे जुल्म व सितम का सिलसिला बंद कर देंगे और हम कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए उन्होंने इमाम हसन असकरी<sup>०</sup> को पहले कैदखाने में रखा और फिर वहां से निकाल कर घर में नज़रबंद कर दिया ताकि अपने ख्याल में उन्हें दुनिया में आने वाले उस बच्चे की तरफ़ से कोई ख़तरा न हो।

लेकिन खुदा ने 15 शाबान 355 हिजरी को अपने इस नुमाइन्दे को ज़मीन पर भेज दिया जिसके आने की ख़बर रसूल ने दी थी और सारे मज़लूम उसके आने का इन्तिज़ार

कर रहे थे। इमाम असकरी ने हुकूमत की कड़ी निगरानी के बावजूद अपने बेटे की पैदाइश के सातवें दिन अक़ीके में 300 कुरबानियां करवा कर लोगों में तक्सीम करवा दी थीं ताकि सबको आख़िरी इमाम की पैदाइश की ख़बर हो जाए।

विलादत के बाद से ही आपकी ग़ैबत शुरू हो गई जिसे ग़ैबते सुग़रा यानी छोटी ग़ैबत कहा जाता है। इमाम हसन असकरी<sup>०</sup> की शहादत तक सिर्फ़ कुछ ख़ास और भरोसेमंद लोगों ने ही आपकी ज़ियारत की थी और उनकी शहादत के बाद सिर्फ़ वही लोग आपसे मुलाकात कर सकते थे जिन्हें आपने अपना नायब और वकील बनाया था।

ग़ैबते सुग़रा से पहले लोग जब भी चाहते थे अपने-अपने ज़माने के इमाम से मुलाकात कर लेते थे और इमाम भी आम लोगों की तरह सबके बीच में ज़िंदगी गुज़ारा करते थे। इसलिए लोग आसानी के साथ उनसे मक्के-मदीने में हज के मौक़े पर और दूसरी जगहों पर मिल लेते थे और उनसे अपने दीनी सवाल और ज़िंदगी की मुश्किलों को

बयान करते थे और इमाम उन्हें उनका जवाब देते थे। यह सिलसिला इमाम अली नकी<sup>०</sup> के दौर तक जारी रहा लेकिन इमाम अली नकी<sup>०</sup> के दौर में अब्बासी हुकूमत ने सख़्ती कर दी और वह अपने जासूसों के ज़रिए आप पर कड़ी निगरानी रखने लगी ताकि आपकी एकटीविटीज़ हुकूमत पर ज़ाहिर रह सकें और आप किन लोगों से मुलाकात करते हैं यह हुकूमत की जानकारी में रहे क्योंकि हुकूमतों को हमेशा से इमामों की तरफ़ से यह ख़तरा लगा रहता था कि लोग एक तरफ़ तो इमामों के फज़ाएल व कमाल और उनकी इस्लामी ज़िंदगी की वजह से उनसे मुहब्बत करते हैं और दूसरी तरफ़ वह हुकूमत करने वालों की जुल्म और गुनाह में डूबी हुई ज़िंदगी भी देखते हैं। तो कहीं ऐसा न हो कि इमाम किसी दिन उनकी हुकूमत के लिए ख़तरा बन जाएं।

इमाम अली नकी<sup>०</sup> ने ऐसे हालात में लोगों से मुलाकात करने और उन्हें उनके सवालों के जवाब देने के लिए अलग-अलग जगहों पर अपने सफ़ीर







# یا ابا صالح المهدی الصری

और वकील बनाए जिनके ज़रिए लोग इमाम से कांटेक्ट में रहते थे, इमाम से सवाल पूछते थे, खुम्स और ज़कात की रकम इमाम के पास पहुंचाते थे और फिर यही वकील लोगों तक इमाम का पैगाम पहुंचाते थे। इमाम अली नकी<sup>३०</sup> के बाद इमाम हसन असकरी<sup>३०</sup> के दौर में भी ऐसे ही हालात थे इसलिए उन्होंने भी अपने सफ़ीरों और नायबों के ज़रिए लोगों से कांटेक्ट बनाए रखा। आपके बाद जब इमाम ज़माना<sup>३०</sup> की ग़ैबते सुगरा शुरू हुई तो इमाम ने भी अपने सफ़ीर और नायब बनाए जो लोगों के सवाल इमाम के पास पहुंचाते थे और इमाम उनके ज़रिए अपना पैगाम लोगों तक पहुंचाते थे। इसके अलावा उन वकीलों की एक ज़िम्मेदारी यह भी थी कि वह नेक किरदार और भरोसेमंद लोगों की इमाम से मुलाकात कराएं। इमाम ज़माना ने जिन लोगों को अपना ख़ास नायब बनाया था वह चार थे और बड़े पाकीज़ा किरदार और इल्म व कमालात के मालिक थे। इमाम के यह ख़ास नायब यह थे:

## 1- उस्मान बिन सईद

यह इमाम अली नकी<sup>३०</sup> और इमाम हसन असकरी<sup>३०</sup> के सहाबी थे और उनके भी वकील थे। हालात इतने ख़राब थे कि यह तेल बेचने का कारोबार करते थे ताकि उसके बहाने लोगों को उनसे मुलाकात में कोई परेशानी न हो और लोग उनके ज़रिए अपने सवाल और शरई रकम इमाम के पास भेज सकें।

अहमद बिन इसहाक ने इमाम अली नकी<sup>३०</sup> से पूछा कि कभी-कभी आप तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है। ऐसे वक़्त में किस तरह आपके अहक़ाम हासिल करें? इमाम ने फ़रमाया कि उसमान बिन सईद से मालूम करना। वह जो कुछ कहें वही मेरा हुक्म है और जो पैगाम पहुंचाएं वही मेरा पैगाम है।

इमाम हसन असकरी<sup>३०</sup> की शहादत के बाद इमाम ज़माना<sup>३०</sup> ने उन्हें अपना वकील बनाया और वह पांच साल तक इमाम के वकील व नायब रहे।

## 2- मुहम्मद बिन उस्मान

यह जनाबे उस्मान बिन सईद के बेटे थे और इन्हें भी इमाम ज़माना<sup>३०</sup> ने अपना नायब बनाया था। जब उनके वालिद का इंतक़ाल हुआ तो इमाम ज़माना<sup>३०</sup> ने उन्हें ताज़ियत पेश करते हुए लिखा, “इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन... हम खुदा के हुक्म के सामने तसलीम हैं और उसके फैसले पर राज़ी हैं। तुम्हारे वालिद ने बहुत पाकीज़ा ज़िंदगी गुज़ारी है। यह मुसीबत तुम्हारे लिए भी मुसीबत है और मेरे लिए भी। अल्लाह उन्हें आख़िरत में खुश रखे। उनके बुलन्द किरदार की सबसे बड़ी निशानी यह है कि अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे जैसी औलाद दी है जो उनकी जान्शीन हैं।”

जनाबे मुहम्मद बिन उस्मान ने ही यह रिवायत नक़ल की है कि इमाम ज़माना<sup>३०</sup> हर साल हज में तशरीफ़ लाते हैं और लोगों से मुलाकात भी करते हैं लेकिन लोग उन्हें पहचान नहीं पाते।

आप चालीस साल तक इमाम<sup>३०</sup> के नायब रहे।

## 3- हुसैन बिन रोह

यह मुहम्मद बिन उस्मान के ख़ास साथियों में से थे। इमाम<sup>३०</sup> ने उनके इंतक़ाल के वक़्त अपने पैगाम के ज़रिए हुसैन बिन रोह को अपना नायब बनाया था।

उनके बारे में इमाम ज़माना के अलफ़ाज़ यह थे, “हम उन्हें पहचानते हैं। अल्लाह उन्हें नेकियों और अपनी मर्ज़ी की पहचान अता फ़रमाए और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे! हमें उनकी किताब मिली है और हमें उन पर पूरी तरह भरोसा है। हमारे नज़दीक़ उनका ऐसा मर्तबा है जिससे हमें खुशी और इत्मिनान है।”

आप इक्कीस साल तक इमाम के नायब रहे।

## 4- अबुल हसन अली बिन मुहम्मद

इन को जनाबे हुसैन बिन रोह ने इमाम के हुक्म से नायब बनाया था। यह अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करते रहे यहां तक कि जब उनके इंतक़ाल

का वक़्त पास आया तो इमाम<sup>३०</sup> ने यह पैगाम दिया, “अली बिन मुहम्मद! तुम्हारी ज़िंदगी में सिर्फ़ छह दिन बचे हैं। अपने सारे काम समेट लो और अपनी जगह किसी और को नायब मत बनाना क्योंकि अब पूरी तरह से ग़ैबत शुरू हो चुकी है। और जुहूर खुदा की इजाज़त से ही होगा।”

आप तीन साल तक इमाम के नायब रहे। और उनके बाद 329 हिजरी में ग़ैबते कुबरा का सिलसिला शुरू हो गया जो आज तक जारी है।

यहां पर ज़ेहन में यह सवाल आ सकता है कि ग़ैबते कुबरा से पहले ग़ैबते सुगरा की क्या ज़रूरत थी?

इसकी एक वजह यह हो सकती है कि अगर ग़ैबते सुगरा के बग़ैर ग़ैबते कुबरा अचानक शुरू हो जाती तो लोग बहुत ज़्यादा हैरानी व परेशानी का शिकार हो जाते और बहुत से लोग इमामत का ही इंकार कर देते। लेकिन करीब 70 साल तक इमाम ज़माना<sup>३०</sup> ने खुदा के हुक्म से लोगों से राब्ता बनाए रखा जिससे लोगों को आपके इमाम होने का यकीन हो गया। लोग आपके नायबों के ज़रिए अपने सवाल के जवाब लिया करते थे जिससे उनको आपके इमाम होने का यकीन हो जाता था। इसी वजह से आपकी पैदाइश के बाद इमाम हसन असकरी<sup>३०</sup> ने बहुत से भरोसेमंद लोगों को आपकी ज़ियारत कराई और उनकी शहादत के बाद आपके चारों नायब भी कुछ भरोसेमंद लोगों की इमाम से मुलाकात कराते रहते थे लेकिन धीरे-धीरे इन आम मुलाकातों में कमी आती गई यहां तक कि ग़ैबते सुगरा के आख़िरी सालों में सिर्फ़ आपके नायब ही आपसे मुलाकात करते थे ताकि धीरे-धीरे सब लोगों का ज़ेहन ग़ैबते कुबरा के लिए तैयार हो जाए। ●





# शुक्रिया

■ डा. हिना बानो फातिमा  
शिया पी.जी. कालेज, लखनऊ

‘शुक्रिया’---एक बहुत ही जाना पहचाना लफ्ज़ जिसका इस्तेमाल करीब-करीब सभी मज़हबों में होता है। कहने में हल्का मगर इतना वज़नी कि इसके आगे दुनिया की हर चीज़ छोटी है।

अगर किसी इंसान की नेकी और एहसान के बदले में उसका शुक्रिया अदा कर दिया जाए तो वह मज़दूरी से ज़्यादा कीमती होता है। इंसान चाहे किसी मज़हब का हो, शुक्रिया अदा करना उसकी अख़लाकी ज़िम्मेदारी है। लेकिन मोमिन के लिए शुक्रिया अदा करना फर्ज़ है। इंसानों के साथ-साथ अल्लाह का भी शुक्रिया अदा करना वाजिब है। सूरए नहल की आयत/78 में है, “और उसी ने तुम्हारे लिए कान, आंख और दिल बनाए हैं कि शायद तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ”।

हर वह चीज़ जो इंसान की इंसानियत में इज़ाफ़ा कर दे अल्लाह के नज़दीक इबादत है। खुदा चाहता है कि उसका बंदा शुक्रगुज़ार बने।

इसी तरह जब इंसान, किसी दूसरे इंसान का शुक्रिया अदा करता है तो उसकी अख़लाकी Value बढ़ जाती है।

और यही इंसान जब अपने रब का शुक्रिया अदा करता है जिसकी नेमतें अन गिनत हैं, जिसका करम अपने बंदे पर उस वक़्त से है जब उसने उसका एक सजदा भी नहीं किया था, जिसकी

नेमतों और एहसानों को गिना ही नहीं जा सकता तो चाह कर भी अपने रब की तमाम नेमतों का शुक्रिया अदा नहीं कर सकता। अगर हर साँस के आसानी से आने और जाने पर ही शुक्रिया अदा करें तो सिर्फ़ इस एक काम पर ज़िंदगी ख़त्म हो जाएगी और शुक्र का हक़ अदा नहीं हो सकेगा। मगर जैसी वह ज़ात वैसा उसका करम। सूरए इब्राहीम की आयत/7 में है, “अगर तुम हमारा शुक्रिया अदा करोगे तो हम नेमतों में इज़ाफ़ा कर देंगे”।

रसूल अल्लाह<sup>०</sup> फ़रमाते हैं, “अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी नेमतें हमेशा तुम पर बाकी रहें तो अल्लाह का ज़्यादा शुक्र अदा किया करो।”

इमाम सादिक<sup>०</sup> फ़रमाते हैं, “उस लम्हे की कद्र करो जब बेसाज़्ता अल्लाह की नेमतों पर शुक्र के लिए सजदे में सर रख दो। इमाम अली<sup>०</sup> फ़रमाते हैं कि किसी बंदे में इतनी ताक़त है ही नहीं कि खुदा की

मुकम्मल नेमतों का शुक्र अदा कर सके मगर खुदा ने कहा है कि अगर मेरा बंदा एक बार ज़वान से “अल-हम्दु लिल्लाह” कहता है तो मैं 50 साल का शुक्रिया कुबूल कर लेता हूँ।”

मगर खुदा उस बंदे का शुक्रिया कुबूल नहीं करता जो अपने माँ-बाप का शुक्रिया अदा न करे यानी अपने शुक्र को वाजिब किया और माँ-बाप का शुक्र ज़रूरी कर दिया। बेशक जिस तरह अल्लाह का शुक्र अदा करना नामुमकिन है उसी तरह माँ-बाप के एहसानों का पूरी तरह शुक्रिया अदा करना भी औलाद के लिए नामुमकिन है।

रसूल<sup>०</sup> के ज़माने में एक शख्स था जो अपनी माँ से बहुत मुहब्बत करता था। एक रात उसकी माँ ने उसे आवाज़ दी और पानी माँगा। जब वह शख्स पानी लेकर आया तो वह सो चुकी थी। उसने उसे जगाना मुनासिब नहीं समझा और पानी हाथ में लिए खड़ा रहा इस इंतज़ार में कि जब माँ जागेगी तो पानी दे दूँगा। यहाँ तक कि सारी रात गुज़र गई और सुबह हो गई। वह खड़ा रहा माँ के जागने के इंतज़ार में। सुबह रसूल<sup>०</sup> के पास में आया और कहने लगा कि या रसूलल्लाह! क्या मैंने अपनी माँ का हक़ अदा कर दिया। आप<sup>०</sup> ने कहा कि सिर्फ़ उस एक रात का जब तुम रो रहे थे और तुम्हारी माँ ने पूरी रात तुम्हें गोद में लेकर

टहल-टहल के गुज़ार दी थी। ऐसी कितनी रातें तुम्हारी परवरिश में गुज़री हैं जिसका शुक्रिया तमाम उम्र में अदा नहीं हो सकता। बस माँ-बाप के साथ नेकी करते रहो और उनका शुक्रिया अदा करते रहो।

जब इंसान, इंसान का शुक्रिया अदा करता है तो उसका विकार बढ़ता है। और जब इंसान खुदा का शुक्रिया अदा करता है तो नेमतों में इज़ाफ़ा होता है, बंदगी के दर्जे बुलंद होते हैं और इबादत का सवाब मिलता है। अल्लाह के नज़दीक शुक्र



# Thank You!

बेहतरीन इबादत है। शुक्र अदा करने की तौफीक भी अल्लाह ही की तरफ से मिलती है। शुक्र खुदा की मारेफत के मिलने और बंदगी के एहसास का नाम है। यह वह इबादत है जिसके लिए कोई वक्त तय नहीं है, बंदा जब चाहे, जहाँ चाहे इस इबादत को अदा कर सकता है।

कभी-कभी तन्हाई में अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे जब दिल खुदा को याद करता है और उसकी नेमतों पर गौर करता है, तो दिल से आवाज़ आती है कि परवरदिगार! मुझे अपनी नेकियों पर नाज़ नहीं मगर तेरी अता पर नाज़ है कि तूने कितना अच्छा नफ़स दिया जो गुनाहों से बेज़ार है, इसे और बेहतर बना दे जैसा तू चाहता है।

ऐ खुदा! तूने इतना दिया कि तेरा शुक्र अदा किया ही नहीं जा सकता।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि वह अक़ल दी जो दुनिया व आख़िरत का नफ़ा-नुक़सान जानती है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने समझ दी।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने इल्म दिया।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने हलाल रिज़्क दिया।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने इज़्ज़त वाला बनाया।

खुदाया! सड़के में मुहम्मद व आले मुहम्मद के इन नेमतों को बाकी रखना।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने रहने को घर दिया।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने सेहतमंद जिस्म दिया।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने मेहनत करने वाले हाथ दिए।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह हाथ दिए जिनमें

हुनर मौजूद है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह हाथ दिए जो देते हैं, किसी के आगे फैलते नहीं और किसी को तकलीफ़ नहीं देते।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने रौशन आँखें दी जो मेरे वजूद की ज़िन्त और नेमत हैं।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने सालिम दिल दिया जो रहम से भरा हुआ है। इस दिल को मुहब्बते मुहम्मद व आले मुहम्मद से रौशनी अता की।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जिसमें हर लम्हा तेरी याद, शुक्र और ख़ौफ़ के साथ रहती है। यह तेरी अता है वरना बंदा इस दुनिया की रंगीनियों में खुदा के ख़ौफ़ को भूल जाता है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो नेकियों की तरफ़ आगे बढ़ाता है और गुनाहों से बेज़ार रहता है। तेरा करम, यह करम बाकी रखना।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो किनाअत करने वाला है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जिसमें हसद और लालच नहीं है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जिसमें बुग़्ज़ और कीना नहीं है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो हर लम्हा तेरी नेमतों पर शुक्रगुज़ार है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जिसमें दुश्मनी नहीं है।

ऐ खुदा! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जिसमें बुराई का बदला बुराई से लेने की तमन्ना

नहीं। सिर्फ़ इतना मेरे खुदा कि उनके इरादों को नेकी से बदल दे जो मेरे लिए बुरा इरादा रखते हैं। उन्हें अक़ले सलीम अता कर।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो बहुत जल्दी साफ़ हो जाता है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो हर शख्स से मुहब्बत करने वाला है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह दिल दिया जो आले मुहम्मद का दीवाना है।

खुदाया! हमारी नस्लों में यह मुहब्बत और किरदार की यह तहारत बाकी रख।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो झूठ से ख़ाली है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो नेक मश्वरे देने वाली है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिल मुन्कर पर अमल करने वाली है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो हक़ को बयान करती है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो शीरी है।

खुदाया! तेरा शुक्र कि तूने वह ज़बान दी जो आले मुहम्मद की मदद करने वाली है।

परवरदिगार! तेरी नेमतों को गिना ही नहीं जा सकता और ऐसी कोई ज़बान है ही नहीं जो तेरी तमाम नेमतों का शुक्र अदा कर सके।

परवरदिगार! हमें आख़िरी वक्त तक शुक्र बजा लाने वाला रखना और हमें मुहम्मद व आले मुहम्मद के सिफ़ात अता कर। ●





# हर मसले का हल

## ■ इशरत फातिमा

अमीरुल मोमिनीन अली<sup>अ</sup> सारी मुश्किलों का हल कुरआन को बताते हैं और उसके बारे में फरमाते हैं, “तुम्हारे दर्द की दवा, तुम्हारी मुश्किलों का हल और तुम्हारे कामों और मामलों का ज़रिया कुरआन है।” कुरआन ऐसी शिफा देने

वाली दवा है जो तमाम बीमारियों का इलाज है और कुरआन के ज़रिए तमाम दुख-दर्द दूर हो जाते हैं। हमें चाहिए कि इस शिफा देने वाले नुस्खे को पढ़ें, उसमें गौर व फ़िक्र करें और तमाम इंडीविजुअल और सोशल मुश्किलों व परेशानियों

के इलाज के तरीके को पहचानें। एक बात क्लियर है कि दर्द के एहसास और मुश्किल को पहचानने से पहले दवा के बारे में बताना नेचर के क़ानून के खिलाफ़ है। इसलिए पहले इंडीविजुअल और सोशल बीमारियों को पहचानना चाहिए और कुरआन आयतों की स्टडी और उसमें गौर व फ़िक्र के ज़रिए उन दर्दों और बीमारियों को पहचानना चाहिए, फिर इस शिफा देने वाले नुस्खे यानी कुरआन से फ़ायदा हासिल करके उनका इलाज करना चाहिए।

आज हमारे समाज में बहुत सी मुश्किलें पाई जाती हैं चाहे वह अलग-अलग लोगों की हों या फिर पूरे समाज की और हमें इन मुश्किलों का हल भी चाहिए। बावजूद इसके बहुत सी ब्रांचेज़ में तरक्कियां भी हुई हैं मगर अभी भी बहुत सी मुश्किलें बाकी रह गई हैं और कौम के ज़िम्मेदार अफ़राद इस कोशिश में हैं कि किसी तरह से इनको हल करें।

हज़रत अली<sup>अ</sup> एक ख़ुतबे में फ़रमाते हैं, “तुम्हारे दर्द की दवा, तुम्हारी मुश्किलों का हल और तुम्हारे कामों और मामलों का ज़रिया कुरआन है।” कुरआन तुम्हारे दर्दों और मुश्किलों के इलाज का नुस्खा है। इसी तरह आप नहजुल बलागा के ख़ुतबा 189 में इरशाद फ़रमाते हैं, “कुरआन ऐसी दवा है जिसके बाद कोई दर्द बाकी नहीं रह जाता।”

हर चीज़ से पहले जिस बात को ध्यान में रखना है वह यह है कि हमें हज़रत अली<sup>अ</sup> की इस बात पर ईमान रखना है, यानी हमारा पूरा अकीदा और ईमान होना चाहिए कि हमारे दर्द और मुश्किलों का सही इलाज चाहे वह इंडीविजुअल मुश्किल हो या सोशल, कुरआन में है।

वैसे तो हम सभी इस बात का ज़बान से इक़रार बड़ी आसानी से कर लेते हैं मगर दिल से ईमान और यकीन के मसले में हम सब की राय एक जैसी नज़र नहीं आती। वैसे अभी भी ऐसे लोग हैं जो भरपूर तरीके से कुरआन के शिफा देने वाला नुस्खा होने पर ईमान और यकीन रखते हैं कि अगर कुरआन की तरफ़ ध्यान दें और उसकी हिदायत पर अमल करें तो कुरआन तमाम बीमारियों के लिए बेहतरीन नुस्खा है। लेकिन ऐसे लोग बहुत कम हैं, यही वजह है कि शायद हमारी मुश्किलों की एक बड़ी वजह ईमान की कमज़ोरी हो और यह चीज़ इस बात की वजह बनी है कि हमें अपनी बहुत सी मुश्किलों का कोई हल ही नज़र नहीं आता। कभी-कभी कुछ लोग नादानी



या जिहालत और गुलत फ़िक्र की बुनियाद पर हो सकता है कि यह नज़रिया पेश करें कि कुरआन जैसी किताब हमारे पास है और हम उसकी पैरवी भी करते हैं लेकिन क्यों हमारी मुश्किलें हल नहीं हुई? आज भी क्यों हम माली प्राब्लम्स के शिकार हैं, जैसे मंहगाई, अच्छे मकान का न होना, अच्छी नौकरी का न होना वगैरा और बहुत सी इंडीविजुअल, सोशल, अख़लाकी और पिछड़ेपन जैसी बेशुमार मुश्किलों को बर्दाश्त कर रहे हैं? इस सवाल के जवाब में यहां पर कुरआन से एक नमूना पेश करते हैं कि किस तरह कुरआन हमारी मुश्किलों का हल है।

सबसे पहले हमारे लिए एक बात क्लियर होना चाहिए कि हमने कुरआन को किस तरह की किताब माना है। अगर हम कुरआन को साइंस और टेक्नोलॉजी की किताब मानते हैं या फिर उसमें मेडिकल बुक की तरह अपनी बीमारियों का इलाज ढूँढते हैं तो शायद हम गुलत कर रहे हैं। क्योंकि कुरआन इन चीज़ों से बढ़कर और एक बहुत बड़े मक़सद को हल करने के लिए नाज़िल हुआ है। अगर हम अपनी ज़िंदगी और अपने नेचर के सिस्टम में ग़ौर करें तो पाते हैं कि अल्लाह ने नेचर को इस तरह बनाया है कि इंसान अपने आस-पास की बहुत सी मुश्किलों को खुद ही हल कर सकता है। लेकिन यही इंसान जो इतनी बड़ी नेमत से मालामाल है जिसे हम अक्ल कहते हैं, बहुत सी जगहों पर परेशान और हैरान नज़र आता है और कभी-कभी इन्हीं परेशानियों की वजह से गुमराही का शिकार भी हो जाता है। इसलिए अब इस इंसान को एक ऐसी ज़िंदगी की किताब चाहिए जो उसे उस मुक़ाम की तरफ़ हिदायत कर सके जहां इसकी अक्ल कमज़ोर पड़ती नज़र आती है। और इसी मसले को नज़र में रख कर खुदा वंदे आलम ने 'वही' के ज़रिए ऐसे क़ानून को हम तक पहुंचाया जो इंसान की हर दौर में मदद करने वाला है। लेकिन इंसान ने इस इलाही सिस्टम को फ़ॉलो नहीं किया जिसे उसने उसके नेचर में डाला था और इसका नतीजा यह हुआ कि आज इंसान जानवरों की सी और कभी-कभी तो उससे बदतर ज़िंदगी गुज़ारने लगा। कुरआन में इरशाद हो रहा है, "अगर बस्ती वाले इमान ले आते और तक्वा इस्तिथार कर लेते तो हम उनके लिए ज़मीन और आसमान से बरकतों के दरवाज़े खोल देते लेकिन उन्होंने झुटलाया तो हमने उनको उनके आमाल की पकड़ में ले

लिया।" <sup>(1)</sup>

इसी वजह से कुरआने करीम साफ़ तौर पर मोमिन की ज़िंदगी में आसानियां, उसके विज़नेस में इज़ाफ़ा और उसके इकोनॉमिकल क्राइसेज़ को दूर करने, इलाही नेमतें नाज़िल होने और दूसरी आसमान और ज़मीन की नेमतों के नाज़िल होने की वजह ईमान और तक्वे को ही मानता है। और इसी के मुक़ाबले में इलाही नेमतों की नाशुक्री को नेमतों के छिन जाने, बलाओं में घिर जाने और ज़िंदगी की मुश्किलों की वजह बताता है। उधर नेमतों के शुक्र और उसकी रिस्पेक्ट को नेमतों में इज़ाफ़े का ज़रिया और नेमतों की नाशुक्री को अज़ाब की वजह जानता है। कुरआन में है, "अगर तुम हमारा शुक्रिया अदा करोगे तो हम नेमतों को बढ़ा देंगे और अगर नाशुक्री करोगे तो हमारा अज़ाब भी बहुत सख़्त है।" <sup>(2)</sup>

आज कोई भी मुसलमान इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि कुरआन जैसी किताब से बड़ी कोई और नेमत हमारे पास है और इसी के साथ इसका भी इंकार नहीं कर सकता कि उसने अल्लाह की इस बेमिसाल नेमत को नज़रअंदाज़

कर दिया है। आज कुरआन हमारी ज़िंदगी में, हमारी बातचीत में और हमारे जीने के तौर-तरीके से कितनी दूर है?? तो क्या अब इससे बढ़कर भी अल्लाह की नेमत की नाशुक्री की कोई मिसाल हो सकती है। यही वजह है कि कुरआन जैसी किताब होते हुए भी आज का मुसलमान दर-दर की ठोकरें खाता नज़र आ रहा है। और फिर अपने परवरदिगार से शिकायत करता है कि उसे मुश्किलों ने घेर रखा है। इसलिए अगर इंसान ज़िंदगी की किसी भी ब्रांच में तरक्की और इज्ज़त चाहता है तो उसे बहेरहाल कुरआन का दामन थामना पड़ेगा जिसे हमने छोड़ रखा है। यहां तक कि उसे समझना और उसपर अमल करना तो दूर की बात है, हमें तो कुरआन पढ़ना भी नहीं आता।

1-सूरए आराफ़/96, 2-सूरए इब्राहीम/7 ●





# बच्चों के झगड़े



■ दुर्दाना हैदर

इंसान की घरेलू जिंदगी उस वक़्त ज़्यादा अच्छी और मजेदार हो जाती है जब घर में बच्चों के हंसने-खेलने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं। इस तरह की छोटी-छोटी खुशियां ही इस बात की वजह बनती हैं कि इंसान जिंदगी से मुहब्बत करे, अच्छी जिंदगी के लिए ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करे और जिंदा रहे। लेकिन जब अचानक बच्चों के खेल-कूद, लड़ाई-झगड़े और बदला लेने के जज़्बात में बदल जाते हैं तो पैरेंट्स भी दंग रह जाते हैं कि उनसे किस तरह निपटा जाए और दोबारा किस तरह उनमें दोस्ती कराई जाए।

बच्चों के लड़ाई-झगड़े की अलग-अलग वजहें होती हैं। इस आर्टिकल में कोशिश की गई है कि उनमें से कुछ वजहें और उनका हल पेश किया जाए।

## बच्चों के झगड़े

मां-बाप की भरपूर कोशिश और घर में बड़ा अच्छा और पुरअमन माहौल पैदा करने के बाद भी कभी-कभी बहन-भाई आपस में झगड़ पड़ते हैं। एक दूसरे पर गुस्सा होते हैं। मां-बाप से शिकायत करते हैं ताकि वह फैसला करें। कभी यह झगड़ा इतना बढ़ जाता है कि मां-बाप भी तंग आ जाते हैं। ऐसे मौकों पर मां-बाप को यह बात ज़ेहन में

रखना चाहिए कि बच्चों का यह झगड़ा एक नेचुरल चीज़ है जो हर घर में पाया जाता है।

याद रखिए! ऐसे झगड़ों को हल कराना बड़ा आसान है जो लड़ाई-झगड़े की सूरत में सामने आ जाएं क्योंकि अगर यह इख़तेलाफ़ दिल में रह जाएं और बाहर न आ सकें तो बाद में किसी बड़ी मुसीबत की वजह भी बन सकते हैं।

बच्चे चाहते हैं कि झगड़ा करके अपनी लिमिटेड शख्सियत को उजागर करें और अपना डिफेंस करके दिखाएं। यह काम बच्चों के लिए न सिर्फ़ नेचुरल बल्कि ज़रूरी भी है। झगड़ालू बच्चों को मालूम होता है कि अपना डिफेंस कैसे करें और अगर इस काम के लिए मार भी खाना पड़े तो उसे बर्दाशत करें।

जो इंसान आगे की जिंदगी में अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है और लोगों के पैरों तले कुचले जाने से बचा रहना चाहता है, ऐसी ताक़त हासिल करना चाहता है जो निगेटिव सोच को पीछे छोड़ कर पाज़िटिव चीज़ों या सोच को अपनी तरफ़ एट्रैक्ट करे तो ऐसे बच्चे को बचपन में भाई-बहनों से झगड़ने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है।

बच्चों को सीख लेना चाहिए कि आपस के इख़तेलाफ़ सिर्फ़ आपसी झगड़ों की सूरत में ही

सामने आते हैं मगर इसके साथ-साथ उनका हल भी पाया जाता है। साथ ही उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि इख़तेलाफ़ के बावजूद एक दूसरे का एहतेराम करना बहुत ज़रूरी है। ऐसे मां-बाप की ज़िम्मेदारी है कि मौके-मौके से बच्चों को समाजी कानूनों और उन पर अमल करने का तरीका सिखाएं। साथ ही दूसरों के हकों और अपने डिफेंस का असली मतलब भी बताएं।

## बच्चों के आपस में झगड़ने की वजहें

### 1- बच्चों के बीच नाइंसाफी

बहनों और भाईयों में आपस के झगड़े की बहुत सी वजहें हो सकती हैं। मशहूर साइकोलोजिस्ट प्रोफ़ेसर हार्सट पेटरी कहते हैं, “तर्जुबों से साबित हुआ है कि बहनों और भाईयों के बीच इंसानवादी बर्ताव अच्छे घरेलू माहौल और ताअल्लुकात में अहम रोल अदा करता है।”

वह अपनी एक किताब ‘बहन भाई में झगड़ा और मोहब्बत’ में कहते हैं, “मैंने बहुत सी पुरानी कहानियों और किस्सों पर रिसर्च की है। ख़ास तौर पर उन किस्सों में बहन-भाईयों के बीच होने वाले झगड़ों पर और इख़तेलाफ़ों की वजहों पर।” एक्सपर्ट्स का कहना है कि चूँकि दूसरे बच्चे की





पैदाईश पर पहले बच्चे के सर से बादशाहत का ताज हट जाता है इसलिए उसके दिल में आने वाले की तरफ से हसद व कीना पैदा हो जाता है। जबकि प्रोफेसर पेटरी का कहना है कि बहनों और भाईयों के बीच एक नेचुरल मुहब्बत होती है, अगर मां-बाप उसको सही तरीके से न बढ़ाएं और न उभारें तो फिर यह कभी सामने नहीं आ सकती। आम तौर पर यह भी देखने में आया है कि लड़ाई-झगड़े के बीच कमजोर बच्चे मां-बाप से आकर शिकायत करते हैं तो मां-बाप उनकी हिमायत करते हैं और दूसरे बच्चे पर गुस्सा दिखाते हैं। जिस से दूसरे बच्चे में गुस्सा व हसद के जज़्बात उभरते हैं। इसलिए इस पर अक्सर लड़ाई-झगड़े होने लगते हैं। कभी-कभी हो सकता है कि बड़े बच्चे का गुस्सा उभर कर सामने न आए और वह वक्ती तौर पर अपने गुस्से को दबा ले लेकिन मौका मिलते ही वह उसे ज़ाहिर ज़रूर करेगा।

पैगम्बरे अकरम<sup>०</sup> फरमाते हैं, “अपने बच्चों के बीच ईसाफ और बराबरी का ध्यान रखो, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह तुम चाहते हो कि

तुम्हारे बीच एहसान, लुफ, मुहब्बत और बराबरी का ध्यान रखा जाए।”

## 2- मां-बाप की तरफ से लापरवाही

अगर मां-बाप अपने बच्चों में से किसी एक पर उसकी कुछ अच्छाईयाँ या अच्छी आदतों की वजह से बहुत ज़्यादा ध्यान देते हैं तो यह बात बाकी भाई बहनों के लिए हसद, गुस्से और झगड़े की वजह बनती है। इसकी साफ़ मिसाल हमें हज़रत यूसुफ<sup>०</sup> के किस्से में नज़र आती है। उनके बेहतरीन किरदार और अच्छी खुसूसियतों की वजह से उनके वालिद उन पर सबसे ज़्यादा ध्यान देते थे। यूं बाकी भाई उनके इतने दुश्मन बन गए कि उनकी जान लेने की ठान ली। इसलिए मां-बाप को चाहिए कि बच्चों के बीच फर्क डाल कर दूसरे बच्चों से लापरवाही बिल्कुल न बरतें।

इमाम मुहम्मद बाकिर<sup>०</sup> से रिवायत है, “मैं अपने बच्चों से जितने वह हक़दार हैं उससे ज़्यादा प्यार-मुहब्बत करता हूँ ताकि दूसरे बच्चों के मुकाबले में बदगुमान या हसद का शिकार न हों, जिस तरह से हज़रत यूसुफ<sup>०</sup> के भाईयों ने उनसे हसद किया और उन्हें कुएं में डाल दिया।”

## पहला रिएक्शन

### बच्चों में झगड़े के बीच मां-बाप का रोल

कुछ मां-बाप बच्चों के लड़ने-झगड़ने की आवाज़ें सुनते हैं लेकिन उसमें बिल्कुल दखलअंदाज़ी नहीं करते। उनका मानना होता है कि बच्चों को खुद ही आपस में अपने मामलों को निपटाना आना चाहिए। इस तरह के मां-बाप बच्चों पर यह ज़ाहिर करते हैं कि उन्हें झगड़े के बारे में कुछ पता ही नहीं, उन्होंने कुछ सुना ही नहीं है। कुछ ही देर बाद मामला बिल्कुल ठंडा पड़ जाता है। हो सकता है कि बच्चों ने आपस में सुलेह कर ली हो और फिर से खेलने लगे हों लेकिन यह भी हो सकता है कि ताक़तवर बच्चे ने अपनी बात मनवा ली हो और कमजोर को दबा दिया हो या बड़े-छोटे के फर्क में बड़ा-छोटे पर हावी हो गया हो। अगर यह हालत इसी तरह बाकी रहे तो ताक़तवर बच्चा बड़ा होकर और घर से बाहर निकल कर कभी भी यह नहीं सीख सकेगा कि उसे कमजोरों का ख़याल रखना चाहिए और उनका एहतेराम करना चाहिए। वह हमेशा अपने से छोटे या कमजोर को नीचा दिखाने के चक्कर में लगा

रहेगा। इसके उलट वह बच्चा जो हमेशा झुकता रहे और हार मानता रहे कभी भी अपना हक़ हासिल करना और अपना डिफेंस करना नहीं सीख सकेगा। हर इन्सान उसे आसानी से अपने रोब में ले लेगा। यूं वह समाज में कभी अपना मुक़ाम नहीं बना पाएगा।

## दूसरा रिएक्शन

मां शोर की आवाज़ें सुनकर कमरे में गई, उसने देखा कि कोर्स की नई किताब फटी हुई पड़ी है और छोटा बेटा रो रहा है, उसके चेहरे पर नील भी पड़ा हुआ है जबकि बड़ा





बेटा कमर पर हाथ रखे तैश के आलम में उसे घूर रहा है। ऐसे में मां फौरन बगैर सोचे-समझे छोटे की तरफ़दारी करेगी, उसे प्यार करेगी और हो सकता है कि बड़े को दो-चार थप्पड़ भी लगा दे। यूँ बड़ा बच्चा अपनी ज़िल्लत महसूस करेगा और सोचेगा कि मां ने उसके साथ इंसाफ़ नहीं किया है क्योंकि ग़लती उसकी नहीं थी। वह ऐसे मौके की ताक में लगा रहेगा जब छोटे से अपना बदला चुका सके क्योंकि झगड़े का आगाज़ तो उसी ने किया था। उसी ने उसकी किताब फाड़ी थी और फिर चीख़-चीख़ कर अम्मी को बुलाया और उनकी हिमायत भी ले ली थी। बस सारी ग़लती उस छोटे की है। दूसरी तरफ़ छोटा यह सोचेगा कि बड़ा भाई अगरचे उससे बड़ा भी है और ताक़तवर भी लेकिन मैं रो-पीट कर अम्मी का सपोर्ट ले सकता हूँ और रो कर बड़े को पिटवा सकता हूँ। बस यह बच्चा रोने को अपना हथियार समझेगा और यह समझेगा कि रो कर सबके ऊपर कंट्रोल कर सकता है।

यहां पर मां ने न सिर्फ़ यह कि बच्चों के बीच नाइंसाफी से काम लिया बल्कि उसके बिहेवियर ने बच्चों को एक दूसरे से दूर भी कर दिया। अगर ऐसा इसी तरह होता रहे तो दोनों बच्चे एक दूसरे से बिल्कुल दूर होते चले जाएंगे। खेल-कूद या दूसरे कामों में एक दूसरे का साथ देने के लिए बहुत मुश्किल से तैयार होंगे। अगर मां-बाप उनके बीच इस दूरी को ख़त्म न करें तो बड़ी आसानी से यह भी हो सकता है कि आगे चलकर दोनों एक दूसरे के भाई या बहन होने से ही इंकार कर दें।

#### तीसरा रिपेक्शन

एक मां वह है जो कमरे में लड़ाई-झगड़े की



आवाज़ सुनकर आती है और चिल्ला कर कहती है कि 'तुम लोगों के फ़ैसले करा-करा के मैं तो थक गई हूँ। बस करो यह लड़ाई-झगड़े! मैंने कह दिया है कि आज न तुम लोगों को आइसक्रीम मिलेगी और न ही बाहर घूमने के लिए जाने दूंगी। और हाँ! आज के बाद तुम लोगों का टी.वी. देखना भी बिल्कुल बंद। दो दिन में अक़ल ठिकाने आ जाएगी। फिर देखूंगी कैसे झगड़ा करते हो।' मां यह कहकर ज़ोर से कमरे का दरवाज़ा बंद करके बाहर आ जाती है और अपने कामों में लग जाती है। इधर बच्चे लड़ाई बंद करने के बजाए एक नई बात पर लड़ना शुरू कर देते हैं और हर एक दूसरे को कुसूरवार ठहराता है कि देखा तुम्हारी वजह से यह सब हुआ है। नहीं! यह सब तुम्हारी हिमाक़तों का नतीजा है। और झगड़ा फिर शुरू हो जाता है। यहां मां ने अपनी तरफ़ से सही फ़ैसला किया है लेकिन हकीकत में नए झगड़े की बुनियाद डाली है।

#### चौथा रिपेक्शन

एक और मां वह है जो लड़ाई की आवाज़ सुनकर बच्चों से कहती है कि 'क्या बात है भई! तुम लोग क्यों लड़ रहे हो? बस ख़त्म करो लड़ाई और दोस्ती कर लो।' मां यह कह कर अपने कामों में लग जाती है और बच्चे झगड़ते ही रहते हैं और यह झगड़ा इतना बढ़ जाता है कि मां को गुस्सा आने लगता है और वह आकर बच्चों को ख़ूब डांट पिलाती है बल्कि कभी-कभी अच्छी तरह पिटाई भी कर देती है। यहां मां ने कोई अच्छा काम नहीं किया है बल्कि उसका यह बिहेवियर बच्चों की तरबियत पर उलटा असर डाल सकता है।

#### सही तरीका क्या है?

1- जब भी फ़ैसला कराएं ध्यान रहे कि कभी भी बच्चों के बीच किसी एक को बड़े, छोटे या कमज़ोर और ताक़तवर होने की वजह से अहमियत न दें। इसी तरह पहले और आखिरी

बच्चे में या लड़के और लड़की के बीच भी फ़र्क़ न रखें और किसी का ख़ास सपोर्ट न करें।

2- बच्चों के झगड़े के बीच आप एक दम अपना पारा न चढ़ने दें बल्कि खुद को कंट्रोल में रखते हुए उस जगह पर जहां बच्चे मौजूद हैं, जाकर खुद को अंजाने में किसी काम में बिज़ी कर लें मगर पूरा ध्यान बच्चों पर रखें। इस तरह यकीनी तौर पर आपको लड़ाई की असली वजह को समझने और हक़दार को उसका हक़ दिलाने में आसानी होगी।

3- लड़ाई की असली वजह जानने की पूरी कोशिश करें और फिर एक बाइंसाफ़ काज़ी की तरह फ़ैसला सुनाएं। किसी एक की हिमायत में बिल्कुल न बोलें, कोशिश करें कि फ़ैसला दोनों के बीच सुलेह और दोस्ती की शक़ल में हो।

4- झगड़े को निपटाते वक़्त बिल्कुल भी बच्चों को नसीहत न करें कि तुम अक़लमंद या बड़े हो इसलिए मान जाओ। अगर आपने ऐसा किया तो जान लें कि बच्चा आपंदा की ज़िंदगी में पेश आने वाले हर मसले में सर झुकाना सीख लेगा। कभी भी किसी भी जगह से अपना हक़ हासिल नहीं कर पाएगा। बेहतर है कि अच्छे तरीके से मसले को हल किया जाए, हक़दार को उसका हक़ और कुसूरवार को हलकी फुलकी सज़ा ज़रूर दी जाए।

5- फ़ैसला कराते वक़्त कोशिश करें कि बच्चों के जज़्बात और गुस्से की वजह का पता चला सके ताकि बच्चे को ऐसा न लगे कि मां-बाप उसकी बात को समझ नहीं रहे हैं या अहमियत नहीं दे रहे हैं। ऐसी सूरत में मां-बाप के फ़ैसले का कोई फ़ायदा नहीं होगा। बच्चा फ़ैसला करवाने वाले मां-बाप से बदगुमान हो जाएगा और हमेशा मौके की ताक में लगा रहेगा कि किसी तरह भाई या बहन से अपना बदला चुका सके। अपने बच्चे को गुस्से में देखकर आप बिल्कुल परेशान न हों क्योंकि गुस्सा एक





नेचुरल चीज़ है, बेहतर है कि प्यार-मोहब्बत से उसे दूर किया जाए।

6- अपने बच्चों को बिल्कुल मार-पीट कर समझाने का आदी न बनाएं ताकि वह भी अपनी आंदा जिंदगी में दूसरों के साथ यह बिहेवियर करने से बच सके।

7- अगर घर का माहौल पुर अमन हो, मां और बाप के बीच इखतेलाफ न हों, वह प्यार-मोहब्बत की जिंदगी गुज़ार रहे हो, एक दूसरे का ख्याल रखते हों, एहतेराम करते हों तो ऐसे माहौल में आप पूरी तरह मुतमईन रहें कि आपका बच्चा कभी भी फ़सादी और झगड़ालू नहीं होगा।

8- मां-बाप बच्चों को मौक़ा दें कि वह खुद ही अपनी मुश्किलों को हल करें और मां-बाप हमेशा उनके झगड़ों का फ़ैसला न कराएं। क्योंकि बहन-भाई के बीच यह लड़ाईयां नेचुरल हैं। इस तरह वह सीखते हैं कि समाजी जिंदगी में कभी नर्मी से काम लेना चाहिए और कभी सख़्ती के साथ अपनी बात पर डट जाना चाहिए, कभी सुलेह करनी चाहिए और कभी नाराज़गी।

9- मौक़े-मौक़े से बच्चों को लड़ाई के नुक़सानों के बारे में बताया जाए और उन्हें समझाया जाए कि हर मसले का हल लड़ाई में नहीं है बल्कि कभी-कभी सुलेह सफ़ाई और नर्मी से भी काम लेना पड़ता है।

10- अगर मां-बाप अपने बच्चों में सेल्फ़-स्टीम के एहसास को उजागर करें तो यह बच्चे बहन और भाई के अलावा दूसरे बच्चों के साथ झगड़ने से भी बचेंगे।

11- बच्चों के लिए मुनासिब नहीं है कि वह टी.वी. पर आने वाला हर प्रोग्राम देखें क्योंकि कुछ प्रोग्राम उन्हें झगड़ा-फ़साद मोल लेने पर उकसाते हैं। इसलिए अच्छा यही है कि बच्चों पर गहरी नज़र रखें और उन्हें हर प्रोग्राम न देखने दें।

12- हो सकता है कि कुछ बच्चों के बीच उम्र का ज़्यादा फ़र्क हो जैसे एक ग्यारह साल का हो और दूसरा तीन साल का। ग्यारह साल वाला ब्लाक से घर बना रहा हो जबकि तीन

साल वाला उसे तोड़ता जा रहा हो। यहां हो सकता है कि दोनों में लड़ाई शुरू हो जाए। इस वक़्त अगर आप वहां पर हों तो बड़े बच्चे से कह सकती हैं कि जब तुम छोटे से थे तो तुम भी यही करते थे। हर काम को ख़राब करते थे और हर चीज़ में तोड़-फोड़ मचाते थे। मैं इसे ले जा रही हूँ आधे घंटे तक तुम आराम से अकेले खेलो लेकिन आधे घंटे बाद तुम दोनों को मिलकर खेलना होगा। ठीक है ना?

13- आप बच्चों को अपने बचपन और भाई बहनों से लड़ाईयों के किस्से सुनाएं ताकि वह जान लें कि यह एक आम बात है, सब बहन भाई आपस में लड़ते ही हैं।

14- प्रोफ़ेसर पीटरी का ख्याल है कि बच्चों के बीच उम्र का फ़र्क जितना ज़्यादा होगा, मां-बाप के लिए फ़ैसला कराना उतना ही आसान होगा। जबकि अगर उम्र में कम फ़र्क होगा तो फ़ैसला कराना बहुत मुश्किल हो जाएगा। इसलिए अगर आपके बच्चे अलग-अलग उम्र के हैं तो उनके बीच उम्र के लिहाज़ से फ़ैसला कराएं।

15- बच्चों के साथ इंसाफ़ से पेश आएँ और इसके लिए ज़रूरी है कि मां-बाप खुद पर कंट्रोल करें और हर बात पर गुस्सा न दिखाएं। हां! बच्चों को इतनी ढील भी न दें कि वह सर चढ़ जाएँ और जो जी में आए करते चले जाएँ। इतनी पाबंदियां भी न लगाएं कि वह अपना ज़रूरी काम करने से भी डरने लगें और डरे हुए नज़र आएँ।

16- सबके साथ बराबरी वाला बिहेवियर अपनाएं। एक शख्स अपनी डायरी में लिखता है, “हम छः बहन-भाई थे लेकिन मेरी मां ने कभी हमारे बीच कोई फ़र्क नहीं रखा और हमेशा सबके साथ एक ही तरीक़े से पेश आई। यहां तक कि अगर कभी सब मिलकर फ़ोटो खींचना चाहते थे तो कभी किसी को अपनी गोद में नहीं बिठाती थीं कि कहीं दूसरे नाराज़ न हो जाएँ और सबको अपने आस-पास बिठाकर फ़ोटो खिंचवाती थीं।” ●



# مؤمل

عمده طباعت	آسان زبان
آسان زبان	قرآنی معلومات
کھوارنی مالومات	اخلاقی باتیں
اگرآنی مالومات	آرٹ گیلری
اگرآنی مالومات	اسلامک پزل
کامیکس	کامیکس

آج ہی ممبر بنئے  
زر سالانہ  
Rs. 150

دیماسیک لکھنؤ

مؤمل  
MUAMMAL

**AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION**

546/203 Near Era's Lucknow Medical College  
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)  
Ph.: 0522-2405646, 9839459672  
email: muammal@al-muammal.org





# दुनियादारी दीनदारी

■ बुतूल अज़रा फ़ातिमा

एक कोने में बैठकर खुदा को याद करना ही दीनदारी है। और दोस्त, रिश्तेदार, माँ-बाप, समाज, मुल्क, बीबी-बच्चे, खाना-कमाना, बच्चों की परवरिश करना वगैरह यह सब दुनियादारी है। अगर दुनियादारी में उलझ गए तो सिर्फ दुनिया के होकर रह जाएंगे और आखिरत खराब हो जाएगी। इसलिए वह दीन को हासिल करने के लिए दुनिया से कटने

रहा था कि इमाम यह ख़बर सुनकर बहुत खुश होंगे लेकिन इमाम ने जैसे ही यह सारी बातें सुनीं, फौरन अपनी जगह से खड़े हो गए और सबके साथ मस्जिद में आए। उन इबादत गुज़ार बंदों को देखकर अपने साथ वालों से पूछा कि यह लोग खाते क्या हैं? उन लोगों ने बड़े फख़ से जवाब दिया कि इनके खाने की चीज़ें हम लोग दे जाते हैं, यह बेचारे अल्लाह वाले तो बस अल्लाह-अल्लाह ही करते रहते हैं। इमाम ने कहा कि अच्छा! तो फिर इन लोगों में और कुत्तों में क्या फ़र्क है? कुत्ते भी तो दूसरों के टुकड़ों पर पलते हैं। उसके बाद उन सब को मस्जिद से बाहर निकालने का हुक्म दिया और कहा कि इस्लाम मेहनत और कोशिश का मज़हब है।

आज भी हमारे समाज में शायद यह थिंकिंग पाई जाती है कि दीनदार लोग बस वही होते हैं जो सिर्फ इबादत करते हैं। वह दुनिया के बारे में कोई ख़बर नहीं रखते और न ही उन्हें अपने बच्चों की कोई फ़िक्र होती। उनकी ग़ैर मौजूदगी में उनके घर में क्या हो रहा है, उन्हें पता ही नहीं होता। ऐसे लोग दुनिया में कमाज़ोर हो जाते हैं और दूसरों की मदद करना तो दूर वह अपनी भी मदद खुद नहीं कर पाते। उनमें किसी का सामना करने की हिम्मत नहीं रहती। और तो और वह अपनी लड़ाई भी खुद नहीं लड़ पाते। क्योंकि वह खुदा के करीब होने की चाहत में खुद को एक कमरे में कैद कर लेते हैं जिसके नतीजे में दुनिया में रहकर भी दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं। दुनिया से बेख़बर होना ही एक मुसलमान को खुदा से दूर कर देता है। वह समझते हैं कि खुदा को पाने का बस एक

दुनिया में जिस चीज़ ने सबसे ज़्यादा गुमराही फैलाई है, वह है दीन और दुनिया का फ़र्क। यानी दीन और दुनिया को दो अलग-अलग हिस्सों में बाँट दिया गया है। दीन को एक तरफ़ खड़ा कर दिया गया और दुनिया को एक तरफ़। खुदा का हुक्म अलग ठहराया गया और दुनिया का क़ानून अलग बताया गया। दुनिया को पाने का रास्ता अलग बताया गया और दीन को पाने का अलग। यह सबसे बड़ी ग़लती थी जो दुनिया में फैली थी। रसूल ने आकर इस ग़लती को पूरी तरह से ख़त्म कर दिया था। और यह पैग़ाम दिया था कि खुदा के बताए हुए उसूलों के मुताबिक़ दुनियादारी ही दीनदारी है। फिर भी लोगों का सोचना यह है कि

लगते हैं और खुद को दुनिया से अलग करना शुरू कर देते हैं। दरअसल यह कहना ज़्यादा सही होगा कि वह कोई अच्छा सा बहाना तलाश करके अपनी ज़िम्मेदारियों से दूर भागना चाहते हैं।

कुछ लोग हज़रत अली<sup>र</sup> के पास आकर खुशी-खुशी और बड़ी अक़ीदत के साथ बताने लगे, “मस्जिद में अल्लाह के कुछ नेक और इबादत गुज़ार बंदे जमा हो गए हैं। यह लोग रात दिन रोज़ा-नमाज़, तस्बीह और खुदा के ज़िक्र में लगे रहते हैं और इन्हें इबादत से इतनी मोहब्बत है कि उन्होंने सारी दुनिया, यहां तक कि अपने बीबी-बच्चों को भी छोड़ दिया है।”

जो लोग यह ख़बर लेकर आए थे उन्हें लग



ही तरीका है और वह यह कि एक कमरे में बैठकर बस अल्लाह को याद किया जाए और बस उसकी इबादत की जाए। जिसका फ़ाएदा अल्लाह का कुर्ब है। हालांकि यह तरीका सही नहीं है। खुदा को इस तरह से खुश नहीं किया जा सकता। आपके ज़ेहन में वह हदीसों और आयतों ज़रूर होंगी जो खुदा ने हमें समाज में रहने के लिए बताई हैं। और वह यही कि हम दुनिया में रहकर और दुनिया के साथ चलकर जो इबादत करते हैं, खुदा उसी को पसंद करता है। खुदा यह चाहता है कि हम इस दुनिया में उसके बताए हुए उसूलों पर चलकर एक अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें। उसने कुरआन के ज़रिए हमें ज़िंदगी के हर पहलू के बारे में बताया है। जैसे अगर हमारे माँ-बाप या कोई एक भी हमसे खुश नहीं है और हम नियत कर लें कि पालने वाले में पांच सौ रकअत नमाज़ पढ़ूंगी, मेरे पैरेंट्स मुझ से राज़ी हो जाएं। तो खुदा हमसे यह कहेगा कि जाओ पहले अपने पैरेंट्स को खुश कर लो तब उसके बाद तुम्हारी नमाज़ कबूल होगी। पहले अपने बाबी-बच्चों को खुश कर लो तब मेरे पास आकर सर झुकाओ। पहले खाने-कमाने की फ़िक्र करो, ऐसा न हो कि तुम्हें मेरे अलावा किसी और के सामने हाथ फैलाना पड़ जाए या तुम्हारे पीछे तुम्हारे

बच्चे भूख से मरने लगें या तुम्हारे बच्चे तुम्हारी इस तरह की इबादत से नफ़रत करने लगें और खुदा के बारे में ग़लत तरह से सोचने लगें... ऐसी इबादत का कोई सवाब नहीं है। अगर हम सही मायनों में इबादत करना चाहते हैं तो हमें अपनी नियत बदलनी होगी, अपने हर काम में खुदा की मर्ज़ी को देखना होगा उसकी पसंद और नापसंद को देखना होगा। तभी हम खुदा और रसूल<sup>॥</sup> को खुश कर सकते हैं। हमारे जिन-जिन कामों में खुदा की मर्ज़ी शामिल हो जाए ऐसे सारे कामों को इबादत में गिना जाता है। यहाँ तक कि सुबह उठने से लेकर रात में सोने तक अगर हम हर छोटे से छोटा काम जो खुदा की मर्ज़ी के लिए कर रहे हों, वह इबादत है। जैसे हमारा स्कूल जाना भी इबादत बन सकता है अगर उसके पीछे हमारी नियत यह हो कि स्कूल जाकर दीन को समझने में मदद मिलेगी और अपने अच्छे अख़लाक़ से दीन को फैला सकेंगे। खाना-पीना भी इबादत बन सकता है इसलिए कि इसके ज़रिए हम खुद को मज़बूत और सेहतमंद बना सकते हैं और मज़बूत रहकर ही हम दीन पर अमल कर सकते हैं और दीन को फैला सकते हैं। खेलना-कूदना, एक्सरसाइज़ करना और घूमने जाना भी इबादत बन सकता है क्योंकि यह चीज़ें हमें सेहतमंद रहने में मदद करती हैं और सेहतमंद रहकर ही खुदा के बताए हुए रास्ते पर चला जा सकता है। बच्चों की परवरिश करना भी इबादत बन सकता है, अगर हमारी नियत यह हो कि यह बच्चे आगे चलकर दीन के काम आएंगे। यानी हमारी रोज़ाना की ज़िंदगी का हर छोटे से छोटा और हर बड़े से बड़ा काम इबादत बन सकता है। लेकिन उसके लिए शर्त यह है कि वह काम करते हुए हमारी नियत यह हो कि हम यह काम को खुदा के लिए कर रहे हैं वरना अगर यह

नियत न हो तो रोज़ा, नमाज़ जैसे आमाल भी इबादत नहीं रहेंगे और कबूल भी नहीं होंगे। हमारी इस बात का सुबूत रसूल इस्लाम<sup>॥</sup> की वह हदीस है जिसमें आप फ़रमाते हैं, “आमाल का दारोमदार नियत पर है।”

“यह बात तो किल्लर हो ही गई है कि अकेले ज़िंदगी गुज़ारना या बिल्कुल अलग-थलग होकर कहीं दूर चले जाना इस्लाम नहीं है। इस्लाम मेहनत और कोशिश का मज़हब है। स्ट्रगल को पसंद करता है। यह दीन मौत नहीं, हयात है। इस्लाम पर चलने वालों की दुनिया और दुनिया के बाद वाली ज़िंदगी बहुत खूबसूरत है।

इस तरह की सोच और ज़िंदगी से एक नुक़सान यह भी होता है कि एक बहुत बड़ी तादाद दीन से दूर हो जाती है क्योंकि जब यह लोग इस तरह की सोच वालों को देखते हैं तो यही समझते हैं कि दीन तो कमरे में बंद हो जाने का नाम है। ज़ाहिर है कि कमरे में बंद हो जाना तो किसी भी समझदार को अच्छा नहीं लगेगा, इसलिए यह लोग सिरे से दीन को ही छोड़ बैठते हैं या कम से कम इबादत से बहुत दूर भाग जाते हैं।

ऊपर जो बातें लिखी गई हैं उनसे यह बात साबित हो गई है कि इस्लाम दुनिया से अलग किसी चीज़ का नाम नहीं है बल्कि कुछ सच है तो वह यह कि दुनिया में लोगों के बीच रहकर खुदा की दी हुई नेमतों को इस्तेमाल करते हुए उसके बताए हुए रास्ते पर चलने का नाम है। इसलिए दुनियादारी और दीनदारी दो अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं बल्कि हकीक़त यह है कि दीन दुनिया से अलग नहीं है और दुनिया दीन से। ●





## ■ डॉ. पैकर जाफरी

काम या सेक्स के फौरन बाद भी न नहाएं। प्रेग्नेंट औरतें नहाने में ज्यादा वक्त न लगाएं क्योंकि इससे कमजोरी और थकावट हो जाती है। नहाने के बाद साफ तौलिए से जिस्म को अच्छी तरह पोंछ लें। हल्के गर्म पानी से नहाना हर उम्र और हर मिजाज के लोगों के लिए हर मौसम में फाएदेमंद है। 10 से 15 मिनट में नहा लेना चाहिए। नहाने के दौरान जिस्म पूरी तरह से रगड़कर साफ किया जाए। साबुन का इस्तेमाल गंदगी और मैल कुचैल दूर करने में मदद देता है।

### दाँतों की सफाई

दाँतों की सफाई सेहत के लिए बहुत ज़रूरी है। दाँतों की खराबी की वजह से हाज़मा खराब हो जाता है और बहुत-सी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। दाँतों की सफाई का सबसे अच्छा तरीका मिस्वाक है और वह नीम की मिस्वाक हो तो सबसे बेहतर है।

रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> ने फरमाया है कि जिब्रईल मिस्वाक के बारे में इतनी बार खुदा का पैगाम लाए कि मुझे लगने लगा कि मिस्वाक कहीं मेरी उम्मत के लिए वाजिब न कर दी जाए।

खुदा के इसी हुक्म से मिस्वाक के फायदों का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। मिस्वाक बबूल की ताज़ा शाखों से या पीलू की जड़ से भी बनाई जाती है। आज कल टूथ-ब्रश आम हैं जो दाँतों की पूरी सफाई करते हैं लेकिन सख्त ब्रश मसूढ़ों के लिए नुकसानदेह है। कुछ लोग मंजन का इस्तेमाल बगैर ब्रश के करते हैं। सिर्फ मंजन के इस्तेमाल से पूरी सफाई नहीं होती क्योंकि दाँतों के बीच रहने वाले खाने के टुकड़े उंगलियों के रगड़ने से नहीं

# हुकूम और सेहत

मुकम्मल सेहत कुछ बुनियादी उसूल अपनाने पर टिकी होती है। यानी अच्छी और मुफ़ीद आदतें अपनाई जाएं और बुरी आदतों से बचा जाए।

सबसे ख़ास सफाई है। जिस्म की सफाई, कपड़ों की सफाई और घर की सफाई। यह चीज़ तंदुरुस्ती के लिए ज़रूरी है।

### जिस्मानी सफाई

गुस्ल यानी नहाना, जिस्म की सफाई का बेहतरीन तरीका है। यह हर उम्र के लिए ज़रूरी है। जाड़ों में कम से कम हफ़्ते में दो बार ज़रूर नहाना चाहिए। जवान और सेहतमंद आदमी ताज़ा पानी से नहाएं, और बच्चे और बूढ़े हल्के गर्म पानी से। एक्ससाइज़ के फौरन बाद या पहले गुस्ल करना ठीक नहीं है। इसी तरह थका देने वाले





निकल पाते। इसके लिए ब्रश या मिस्वाक का इस्तेमाल ज़रूरी है। ज़बान को भी सुबह के वक़्त अच्छी तरह साफ़ करना चाहिए।

**नोट:-** खाना, फल या मिठाई खाने के बाद दाँतों में मिस्वाक या ब्रश करना ज़रूरी है। इस से दाँतों के बीच की जड़ें साफ़ हो जाती हैं। यह सेहत के लिए भी फ़ायदेमंद है।

### नाखुन और बालों की सफ़ाई

नाखुन और बालों की सफ़ाई भी जिस्म की सफ़ाई में शामिल है। हाथ और पैरों के नाखुन हफ़्ते में एक बार ज़रूर काटें। बग़ल और पेडू के बाल भी महीने में कम से कम एक बार साफ़ किए जाएं। इसी तरह सर के बाल, मूँछ और दाढ़ी के बाल भी अच्छी तरह सलीक़े से कतर कर साफ़ करें।

### कपड़ों की सफ़ाई

वह कपड़े जो बदन से चिपके रहते जैसे बनियाइन वगैरा, रोज़ाना बदलें और साबुन से धोएं। गंदे कपड़े सेहत के लिए नुक़सानदेह हैं।

कपड़े हर मौसम में तीन-चार दिन में बदलना और धो देना चाहिए। कपड़े मौसम के लिहाज़ से ढीले और आरामदेह पहनें।

### मकान की सफ़ाई

मकान की सफ़ाई भी हमारी सेहत में एक अहम रोल अदा करती है। मकान में किसी भी जगह मकड़ी का जाला न लगने दें। मकान के फ़र्श को हर रोज़ एंटी-बैक्टेरिया पानी में मिलाकर साफ़ करें।

मकान की खिड़कियाँ, दरवाज़े और रौशनदान खुले रखे जाएं ताकि हवा और रौशनी आ सके। घरों में सीलन न हो और गंदे पानी के बहाव और उसके निकलने का अच्छा इंतज़ाम हो। गुसलख़ाने और ट्वायलेट की सफ़ाई का भी ख़ास ख़याल रखें।

## FOOD + HEALTH

### खाना

इंसानी ज़िंदगी में ग़िज़ा की बड़ी अहमियत है क्योंकि इंसानी ज़िंदगी और हुस्न व सेहत का बहुत कुछ दारोमदार ग़िज़ा पर ही है।

खाना खाने के लिए वक़्त की पाबंदी ज़रूरी है। ग़िज़ा उम्र, मौसम और माहौल के मुताबिक़ होना चाहिए।

### बच्चों की ग़िज़ा

बच्चों की ग़िज़ा ऐसी होनी चाहिए जो पतली, आसानी से जल्द हज़म होने वाली और प्रोटीन से

भरी हुई हो। जैसे दूध, मक्खन, अंडे, गोश्त का शोरबा, सब्ज़ियों का सूप और दालें।

### जवानों की ग़िज़ा

जवानों की ग़िज़ाएं बच्चों से कुछ ज़्यादा ताक़तवर और कुछ ज़्यादा होना चाहिए। दालें, गोश्त, ड्राई-फ़्रूट्स, सब्ज़ियाँ, रोटी, चावल, मौसमी फल यानी हर किस्म की ग़िज़ाएं इस उम्र में आसानी से हज़म हो जाती हैं।

### बूढ़ों की ग़िज़ा

हल्की और जल्द हज़म होने वाली ग़िज़ाएं लें। चिकनी और देर में हज़म होने वाली ग़िज़ाओं से बचें। हरी तरकारियाँ, पर्रिंदों का गोश्त, मछली, मूँग (छिलके वाली) की दाल, मौसमी फल वगैरा को पाबंदी से इस्तेमाल करें।

### ग़िज़ाओं के बारे में एक ख़ास बात

मौसम बदलने के साथ-साथ ग़िज़ाएं भी बदलना चाहिए। सर्दियों में गोश्त, मछली और अंडे वगैरा इस्तेमाल करें। गर्मियों में दही, दूध, हरी तरकारियाँ खाएं। बरसात के मौसम में पत्ते वाली हरी सब्ज़ियाँ, खीरा, तरबूज़ और दही वगैरा न लें। ख़ूब पेट भर कर खाने और बार-बार खाने से बचना चाहिए। तेज़ गर्म मसालेदार, लाल मिर्च, बादी और चिकनी ग़िज़ाओं से बचें क्योंकि यह सेहत को बहुत नुक़सान पहुँचाती हैं। ●





اسلام علیک یا شمس الثموس  
اسلام علیک یا انیس النفوس

یا علی بن ابی طالب

# इमाम अ० अली रज़ा

■ कमर मेहदी

इमाम अली रज़ा<sup>अ०</sup> सातवें इमाम के बेटे हैं 148 हिजरी में आपकी विलादत और 203 हिजरी में शहादत हुई।

आठवें इमाम अपने वालिदे माजिद की शहादत के बाद खुदा के हुक्म और अपने मासूम बुजुर्गों के पहचनवाने से इमामत के ओहदे पर फ़ाएज़ हुए। अपनी इमामत का कुछ हिस्सा अब्बासी ख़लीफ़ा, हारून रशीद के ज़माने में गुज़ारा। इसके बाद हारून के बेटे अमीन अब्बासी और फिर मामून अब्बासी के ज़माने में भी रहे।

हारून रशीद की मौत के बाद उसके बेटों मामून और अमीन में इस्तेलाफ़ पैदा हो गया जिसके नतीजे में बड़ी ख़ूनी जंगें शुरू हो गईं और आखिरकार अमीन मारा गया और मामून ने ख़िलाफ़त पर कब्ज़ा कर लिया।

उस वक़्त तक अलवी सादात के लिए बनी अब्बास की सियासत बड़ी सख़्त और ख़ूनी थी जो कि दिन ब दिन सख़्त से

सख़्त होती जा रही थी। और जब भी अलवियों में से कोई शख्स अपना मूवमेंट शुरू करता था तो ख़ूनी जंगों का एक सिलसिला शुरू हो जाता था और यह ख़िलाफ़त के लिए बहुत सख़्त मुश्किलें पैदा कर देता था।

यूं तो अहलेबैत में से मासूम इमाम उस ज़माने तक मूवमेंट्स और इंक़ेलाब शुरू करने वालों के साथ कोई मदद या दख़लअंदाजी नहीं किया करते थे लेकिन शिया जिनकी तादाद उस ज़माने में भी अच्छी ख़ासी थी हमेशा मासूम इमामों को ही अपना दीनी रहनुमा जानते थे और उनको ही पैग़म्बरे अकरम<sup>अ०</sup> के हकीक़ी ख़लीफ़ा मानते थे क्योंकि ख़िलाफ़त और ख़लीफ़ा का दरबार, ईरान के बादशाहों के दरबारों जैसा नमूना बन चुके थे और एक लापरवाह व अय्याश टोले के ज़रिए मुल्की काम अंजाम दिए जाते थे। शिया उन हुक्मतों को नापाक और अपने इमामों की शान के ख़िलाफ़ जानते थे। इसलिए इन हालात का बाकी रहना और फैलना भी हुक्मत और ख़िलाफ़त के लिए बड़ा ख़तरनाक था और ये ख़तरा हमेशा लगा रहता था कि कहीं शिया बगावत न कर दें।

मामून ने देखा था कि इन मुश्किलों को तो उसके बाप-दादा की सत्तर साल पुरानी सियासत हल नहीं कर सकी थी। इसलिए वह चाहता था कि एक नई सियासी चाल के ज़रिए इन मुश्किलों को ख़त्म कर दे और वह यह थी कि आठवें इमाम को अपना वली अहद (जानशीन) बना ले और इस तरह आगे के लिए हर ऐसी मुश्किल का हल तलाश कर ले क्योंकि जब अलवी सादात अपने आपको ख़िलाफ़त का हिस्सेदार समझ लेंगे और इसके अलावा शिया भी अपने इमाम को ख़िलाफ़त का जानशीन देख लेंगे जिसको वह हमेशा नापाक



और गंदा कहते आए हैं तो उस वक्त वह रूहानी खुलूस व मोहब्बत जो वह इन मासूम इमामों के बारे में रखते हैं, धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी और इस तरह उनके मज़हबी अक्कीदे भी मिट जाएंगे। इसके साथ ही वह ख़तरा भी अपने आप मिट जाएगा जो उनको खिलाफ़त और सियासत से रहता है।

ज़ाहिर है कि असल मक़सद हासिल हो जाने के बाद मामून के लिए इमाम को ख़त्म कर देना कोई मुश्किल काम नहीं था। मामून ने अपने इस फैसले और इरादे को पूरा करने के लिए इमाम को मदीने से मर्व में बुलाया। सबसे पहले आपको खिलाफ़त की और इसके बाद जानशीनी की पेशकश की। लेकिन आपने अलग-अलग तरीकों से इस पेशकश को कुबूल न करते हुए टुकरा दिया। लेकिन आख़िरकार मामून ने बड़ी ज़िद करके जानशीनी पर आपको राज़ी कर लिया और इमाम ने भी मजबूर होकर इस शर्त पर यह ओहदा कुबूल कर लिया कि हुकूमत के मामलात या किसी को ओहदा देने या हटाने में कोई दखल नहीं देंगे।

ये वाक़ेआ 200 हिजरी में पेश आया था मगर थोड़े ही ज़माने बाद मामून को शियों की बढ़ती हुई तादाद और तरक्की, इमाम रज़ा से बहुत ज़्यादा मोहब्बत, पब्लिक का आप से लगाव और यहाँ तक कि खुद अपने सिपाहियों और बड़े ओहदेदारों का ध्यान इमाम की तरफ़ ज़्यादा हो जाने से उसको अपनी गुलती का एहसास हो गया और वह इमाम को ही किसी बहाने से शहीद करने पर लग गया। इसी वजह से उसने एक दिन आपको ज़हर दिलवाकर शहीद करवा दिया।

शहादत के बाद आठवें इमाम को ईरान के शहर तूस में जिसको अब मशहद कहते हैं दफ़न कर दिया गया। ●

इमाम अली रज़ा<sup>अ०</sup>:

**बेशक सबसे बुरा इंसान वह है जो दूसरों की मदद करने से भागे, अकेला खाना खाए और अपने मातहत की पिटाई करे।**

## सितारों के हालात

अब्दुल मलिक बिन आयन जो कि जुरारा बिन आयन के भाई थे, हदीसों बयान करते थे फिर भी सितारों और ज़िंदगी पर उनके असर का पक्का यकीन रखते थे। इस टॉपिक पर बहुत सी किताबें जमा कर रखी थीं और हर मसले के लिए उनकी स्टडी किया करते थे, वह जो इरादा करते और जो काम भी करना चाहते, पहले इन किताबों को पढ़ा करते थे और सितारों का हिसाब-किताब लगाते थे ताकि देखें कि सितारों की हालत क्या कहती है। धीरे-धीरे वह इस काम के आदी हो गए और इस आदत ने एक तरह का भरोसा उनके अंदर पैदा कर दिया, इस तरह कि सारे कामों में सितारे की तरफ़ देखते थे।

उन्होंने महसूस किया कि इस की वजह से उनकी ज़िंदगी बेकार हो गई है और रोज़ाना उनका वसवसा बढ़ता जा रहा है और अगर यही हालत बाकी रही और उन्होंने नेक व बद दिन और घंटे और नेक और बद ताले और इसी तरह की दूसरी चीज़ों को ज़िंदगी में असर अंदाज़ जाना तो उनकी ज़िंदगी का सिस्टम दरहम-बरहम

हो जाएगा और दूसरी तरफ़ वह इन चीज़ों के असर की मुख़ालिफ़त की ताक़त भी अपने में नहीं पा रहे थे। साथ ही हमेशा उन लोगों पर जो इन सितारों के झमेलों में पड़े बग़ैर अपने कामों में लगे रहते हैं और खुदा पर भरोसा करते हैं रश्क करते थे। एक दिन उस शख्स ने अपने हालात इमाम जाफ़र सादिक<sup>अ०</sup> को बताए और कहने लगा कि इस इल्म की वजह से मेरे हाथ पैर बंध चुके हैं और मेरे लिए यह मुमकिन नहीं कि इससे खुद को अलग कर लूँ। इमाम जाफ़र सादिक<sup>अ०</sup> ने बड़े ताअज्जुब से उससे सवाल किया कि तुम इन चीज़ों पर भरोसा रखते हो और इन पर अमल करते हो? “हां! ऐ रसूल के बेटे”

इमाम<sup>अ०</sup> ने फ़रमाया कि मैं तुमको हुक्म देता हूँ कि जाओ और उन सारी किताबों को आग लगा दो। इमाम<sup>अ०</sup> के हुक्म ने उसके दिल को मज़बूत किया, वह रवाना हुआ और उन सारी किताबों को आग लगा कर सुकून हासिल किया।

(वसाएलुश शिया, 2/181)



# अचारी सब्जी समोसे

## तरकीब:

आलू के भुरते में सारी कटी हुई सब्जियाँ, मसाले और मिक्स अचार मिलाकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। समोसे की पट्टी के बीच में मसाला भरकर उसे लपेट दें और फ्राई कर लें। केचप के साथ गर्म-गर्म सर्व करें।

## इंग्रेडियेंट्स:

आलू: 1/2 किलो

मिक्स अचार: डेढ़ खाने का चमचा

बारीक कटा हुआ

कुकिंग आयल: डेढ़ कप

समोसे की पट्टियाँ: 12

चाट मसाला: 1/4 चाय का चमचा

नमक: 1/2 चाय का चम्मच

काली मिर्च: 1/2 चाय का चमचा

जीरा: 1/2 चाय का चमचा

कलौंजी: 1/2 चाय का चमचा

आलू उबाल कर भुरता किए हुए

मटर उबले हुए

शिमला मिर्च कटी हुई

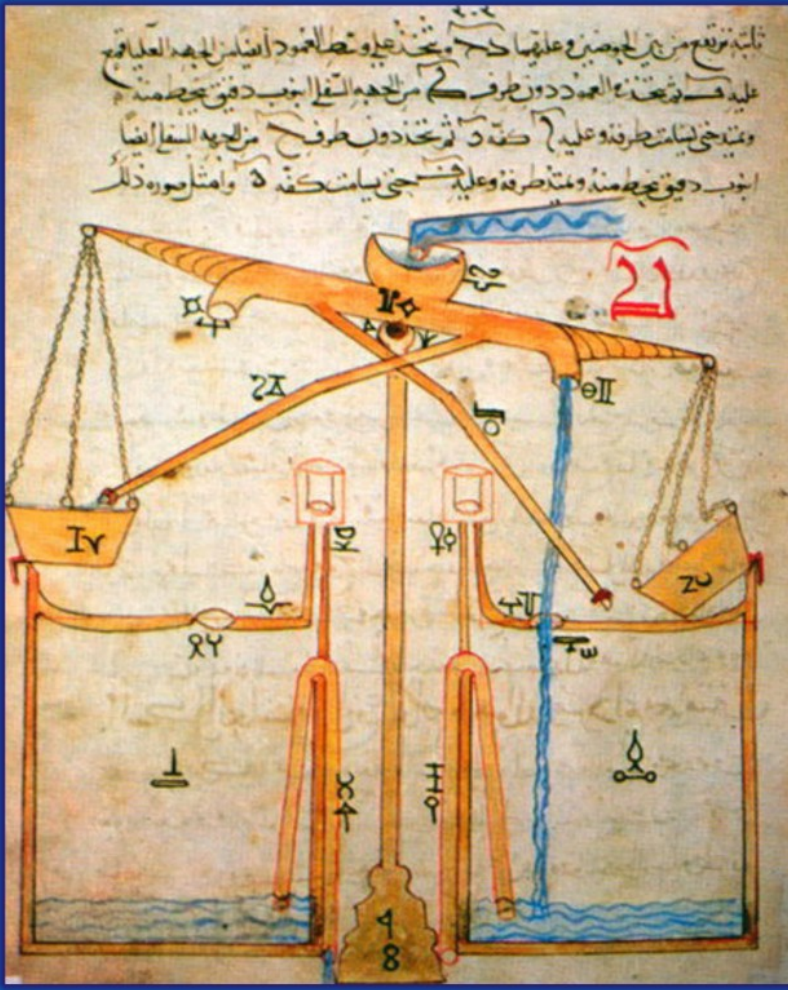
हरी मिर्च कटी हुई

गाजर

हरा धनिया







# मुस्लिम. साइंटिस्ट्स

## ■ अली ज़फर ज़ैदी

आज इल्म और साइंस का नाम आते ही हर आदमी का ध्यान फौरन यूरोपियन कंट्रीज़ की तरफ इस तरह चला जाता है जैसे दुनिया में पश्चिमी मुल्कों के अलावा कहीं इल्म नाम की चीज़ पाई ही नहीं जाती। इस्लामी दुनिया को आज हर तरह की चीज़ों से जोड़ा जाता है मगर इल्म और साइंस का नाम आते ही न सिर्फ यह कि दूसरे बल्कि मुसलमान भी यही समझते हैं कि आज की मॉडर्न साइंस का क्रेडिट सिर्फ यूरोप

और अमेरिका को ही जाता है और इसमें इस्लामिक कंट्रीज़ का कोई अमल-दखल नहीं रहा है और न ही आज है। जबकि ऐसा सोचना बिल्कुल ग़लत है और ऐसी थिंकिंग उन्हीं लोगों की होती है कि जिन्होंने या तो हिस्ट्री की स्टडी नहीं की है या फिर वह तास्सुब से काम लेते हैं। इस्लाम ने दुनिया को उस वक़्त इल्म और साइंस की रौशनी दिखाई जब यूरोप जिहालत के अंधेरों में डूबा हुआ था। मुस्लिम साइंटिस्ट्स ने

मॉडर्न साइंस को सिर्फ ईजाद ही नहीं किया बल्कि उसे इस्तेमाल के लायक भी बनाया और फिर पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट भी किया। रसूल खुदा<sup>ﷺ</sup> ने सातवीं सदी में इस्लाम को लोगों के बीच पहचनवाया और एक इलाही दीन और उसकी टीचिंग्स इस तेज़ी के साथ दुनिया में फैलने लगीं जिसका अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि इसी सदी के आखिर तक इस्लाम ने पूरे अरबियन पेनेनसुला को अपनी टीचिंग्स से नूरानी कर दिया। यही वह दौर था कि मुसलमान स्कालर्स और साइंटिस्ट्स ने इस्लामी और कुरआनी टीचिंग्स से असर लेकर इल्म के हर मैदान में अपना लौहा मनवा लिया। मुसलमान स्कालर्स ने न सिर्फ कुरआनी टीचिंग्स की रौशनी में नए-नए उलूम की खोज की बल्कि इसी के साथ-साथ उस वक़्त की मशहूर यूनानी फिलॉसोफी को भी नई ज़िंदगी दी जो उस वक़्त के चर्च की सियासत की वजह से नाबूदी का शिकार हो रही थी।

यही वजह है कि अगर हम उस दौर के मुसलमान साइंटिस्ट्स के अज़ीम कारनामों पर नज़र डालें तो पता चलता है कि मुस्लिम साइंटिस्ट्स ने उस दौर में इंसानियत की कितनी ख़िदमत की है कि जिसका असर आज भी बाकी है। अगर आज दुनिया मॉडर्न साइंसेस में तरक्की का ज़शन मना रही है तो इसमें एक अहम रोल उन मुस्लिम साइंटिस्ट का है जिन्होंने इल्म की हर ब्रांच को उस वक़्त लोगों के सामने पेश कर दिया था जब तमाम दुनिया ख़ास तौर से पश्चिमी मुल्क जिहालत के अंधेरे में ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

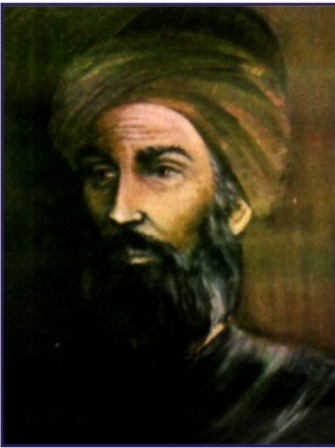
उस दौर के मुस्लिम साइंटिस्ट्स ने मॉडर्न साइंस की सभी ब्रांचों में जैसे मेडिसिन, मैथमेटिक्स, एस्ट्रॉनॉमी, केमेस्ट्री, फिलॉसोफी, आर्ट और ऑर्कटेक्चर में बहुत ज़्यादा काम किया था और इन सबजेक्ट्स को अपने ज़माने में ख़ासी मकबूलियत भी दिलाई थी। जिसका अंदाज़ा नमूने



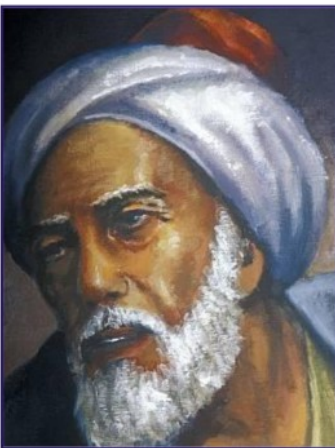




**Zakariya Razi**



**Al-Zahrawi**



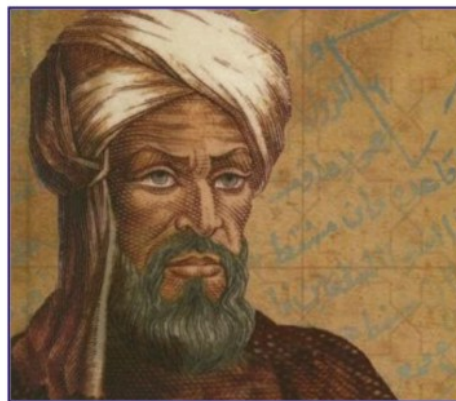
**Al-Idrisi**

के तौर पर कुछ मुस्लिम साइंटिस्ट्स की रिसर्च को नज़र में रखकर किया जा सकता है। वैसे तो मुस्लिम साइंटिस्ट्स की एक लम्बी लिस्ट है जिसको बयान करने के लिए बहुत सी किताबें लिखी जाने की ज़रूरत है। यहां पर कुछ नाम नमूने के तौर पर पेश किए जा रहे हैं।

(1)-**बू अली सीना** (980-1037) जिन्हें इंग्लिश में 'अवीसीना' के नाम से जाना जाता है, ने अकेले 246 किताबें लिखी हैं। उनकी मशहूर किताब 'अल-शिफा' जिसकी 20 जिल्दें हैं। 'अल-कानून' मेडिकल साइंस की वह किताब है जिसे यूरोपियन यूनिवर्सिटियों में पढ़ाया गया। डॉ. विलियम ऑसलर जिसने 'इवेलुवेशन ऑफ़ मार्टन साइंस' नामी किताब लिखी है कहता है, "इब्ने सीना की किताब 'अल कानून' ऐसी किताब है जिसको एक लम्बे वक़्त तक मेडिकल साइंस में बाइबिल के नाम से जाना जाता रहा है। इस किताब में इस्लाम के शुरूआती दौर से लेकर उनके ज़माने तक मेडिकल साइंस की लाखों टर्मिनॉलोजीज़ को समेट दिया गया है।"



**Bu Ali sina**



**Al-khwarzimi**

इब्ने सीना ही वह पहले साइंटिस्ट थे जिन्होंने 'फ़िथ्राईसिस' और 'ट्यूबरक्लोसिस' जैसी भारी बीमारियों को पहचाना और उनके होने की असली वजह मिट्टी और पानी को बताया। इब्ने सीना ने इंसान की साइकॉलोजी और सेहत के बीच पाए जाने वाले गहरे रिश्तों का भी पता लगाया। इब्ने सीना ही वह पहले मेडिकल साइंटिस्ट थे जिन्होंने सबसे पहले 'मेनिनजाइटिस' जैसी बीमारी का पता लगाया। इसके अलावा इब्ने सीना ने एनॉटोमी, गैनेकॉलोजी और चाइल्ड हेल्थ जैसी दूसरी मेडिकल ब्रांचेस में बहुत ज़्यादा अहम इन्फ़ारमेशन दुनिया के सामने पेश की।

एक बात यह भी ज़रूरी है कि इब्ने सीना जैसे अज़ीम साइंटिस्ट की तरक्की का राज़ सिर्फ़ रसूले अकरम" की वह हदीस है जिसमें आपने फ़रमाया था कि इस दुनिया में हर बीमारी का इलाज मौजूद है। बस इसी बात ने इब्ने सीना जैसी अज़ीम शख्सियत को इतना हौसला और हिम्मत दी कि इस्लामी दुनिया में आज तक दूसरा इब्ने सीना पैदा नहीं हो सका। यह हिम्मत अल्लाह और उसके रसूल पर यकीन का नतीजा है कि अगर हमारी कौम के जवान भी जिंदगी की किसी भी फ़ील्ड में तरक्की हासिल करना चाहते हैं तो उन्हें भी 'इब्ने सीना' जैसी मेहनत और ईमान के साथ आगे क़दम बढ़ाना होगा।

(2) **हुनैन बिन इस्हाक़** एक मशहूर फ़िलॉस्फ़र और फ़िज़िशियन थे। जिन्होंने मेडिसिन, फ़िज़िक्स, मेथमेटिक्स, एस्ट्रॉनोमी और वेटेरिनेरी साइंस में बहुत काम किया था।

(3) **ज़करिया अल-राज़ी** (865-925 AD), जिन्हें इंग्लिश में 'राज़ेस' के नाम से जाना जाता है। राज़ी का शुमार अपने ज़माने के सबसे बड़े मुस्लिम डाक्टर्स में होता था। यही नहीं बल्कि इब्ने सीना के बाद अगर किसी का नाम आता है तो ज़करिया राज़ी का ही आता है। आपने 200 से ज़्यादा किताबें लिखी हैं जिसमें किताब 'अल-मंसूरी' भी है जो यूनानी मेडिसिन पर 10 वॉल्यूम्स में लिखी गई है। इसके अलावा 'अल-हावी' 20 वॉल्यूम्स में मेडिसिन पर एक इन्सॉइक्लोपीडिया है। ज़करिया राज़ी ने ही सबसे पहले सब्सटेंसेस को तीन पार्ट्स (वेजेटेबिल, एनीमल और मिनिरल्स) में क्लासीफ़ाईड किया था। ज़करिया राज़ी ने ही किडनी और ब्लेडर स्टोन के बारे में पता लगाया था और दूसरी बहुत सी इन्फ़ेक्शन डिजीज़ेस का पता लगाया था। स्माल पॉक्स और मीज़ेल्स जैसी उस ज़माने की भयानक बीमारियों की सही इन्फ़ारमेशन ज़करिया राज़ी ने ही कलेक्ट की थी। सबसे इम्पोर्टेंट खोज ज़करिया राज़ी की यह थी कि आपने सबसे पहले एलकोहल को मेडिकल साइंस में इस्तेमाल करने का पता लगाया।

(4) **अबुल कासिम अल-ज़हरावी** (963-1013 AD) जिन्हें यूरोप में 'अबुलकैसिस' के नाम से जाना जाता है। ज़करिया राज़ी के बाद मेडिकल साइंस में



अगर किसी का नाम आता है तो इन्हीं का है। जहरावी ने मेडिकल इंसाइक्लोपीडिया लिखी जिसमें 200 सर्जिकल इंस्ट्रूमेंट्स के बारे में लिखा है। उनमें से ज्यादातर को उन्होंने खुद ही डिजाइन किया था। यह मेडिकल इंसाइक्लोपीडिया यूरोपियन यूनिवर्सिटीज़ में करीब 500 बरस तक एक सब्जेक्ट की हैसियत से पढ़ाया जाता रहा है।

(5) **अल-इदरीसी** जिनकी पैदाइश 1099 AD में स्पेन के कोरडोवा शहर में हुई थी। आपने बहुत ज्यादा मेडिसिनल प्लान्ट्स की खोज की और बॉटनी में फौना, जुलोजी और थेरेप्यूटिकल ऑस्पेक्ट्स पर कई किताबें लिखी हैं।

(6) **मुहम्मद बिन मूसा अल-ख़ारज़मी** जिनकी पैदाइश 780 AD में हुई, को फॉदर ऑफ अलजबरा कहा जाता है। ख़ारज़मी ने ही 'साइन', 'कोसाइन' और ट्रेगनोमेट्रिकल टेबेल्स को डेवलप किया था। इसके अलावा बहुत से फार्मूलों की भी रिसर्च की थी। ख़ारज़मी ने ही सबसे पहले अरबिक न्यूमेरल्स, डेसीमल पोज़ीशन सिस्टम और जीरो के कान्सेप्ट को इंट्रोड्यूज़ किया था।

(7) **उमर ख़य्याम** जिन्हें ज्यादातर लोग शेर व शायरी से पहचानते हैं मगर वह अपने दौर के बहुत बड़े मैथमेटिशियन थे। ख़य्याम ने युक्लिड्स थ्योरेम्स को क्रीटिसाइज़ किया था, 'थर्ड डिग्री इक्वेशंस' को हल करने का मैथड पेश किया था, बाइनोमियल्स की फील्ड और उसके को-इफिशिएंट्स के बारे में भी रिसर्च की और उनका हल पेश किया था।

(8) **अल-किन्दी** (873 AD) जिन्हें अरब का पहला फिलॉसफ़र माना जाता है। आपने न सिर्फ़ फिलॉसोफी बल्कि और दूसरी साइंटिफ़िक ब्रांचेस जैसे फिज़िक्स, ऑप्टिक्स, रेफ़्लेक्शन ऑफ़ लाइट, स्पेसिफ़िक वेट्स, टाइड्स और मेटॉलर्जी में भी काफी काम किया है।

मुस्लिम साइंटिस्ट्स ने जहां मैथमेटिक्स, फिज़िक्स, साइकोलॉजी में अलग-अलग डिस्कवरीज़ की हैं वहीं केमिस्ट्री में भी बहुत से नए सबस्टेंसेस की भी खोज की है जैसे पोटाश, नाइट्रेट ऑफ़ सिलवर, नाइट्रेट और सल्फ़रिक ऐसिड। इसी के साथ-साथ इवापोरेशन के इम्प्रूविंग मैथड्स जैसे फिल्ट्रेशन, सब्लाइमेशन, कैल्साईनेशन, मेलटिंग, डिस्टिलेशन और क्रिस्टलाइज़ेशन वगैरा के भी नए-नए तरीके खोजे हैं।

(9) **जाबिर बिन हय्यान** जिन्हें फ़ादर ऑफ़ अरब अलकेमी कहा जाता है, ने फार्माकॉलोजी और टॉक्सीकॉलोजी की फील्ड में भी बहुत काम किया है।

(10) **अल-असमई** (740-882 AD) एक फिलॉलोजिस्ट (पुराने लिटरेचर को पढ़ने वाला) थे।

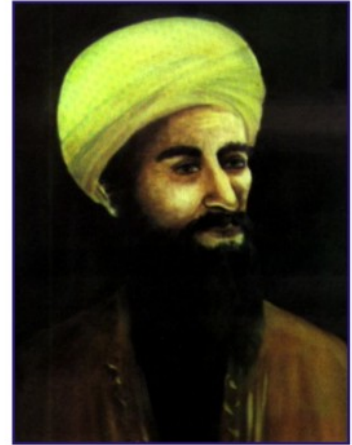
जिसकी मदद से उन्होंने जुलॉजी, बॉटनी और एनिमल हज़बेन्ड्री की फील्ड में बहुत काम किया।

(11) **इब्ने माजिद** ने ज्योग्राफी की फील्ड में कमपास को इन्वेन्ट किया था।

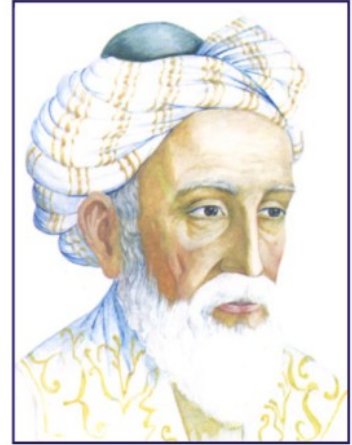
(12) **अल-ज़रकली** जो कि अन्दुलुस के रहने वाले थे। उन्होंने एस्ट्रोलैब को इन्वेन्ट किया और रेट ऑफ़ मोशन को मीज़र किया। ज़रकली ने बहुत से एस्ट्रोनॉमिकल इंस्ट्रूमेंट्स को भी तैयार किए और पहली बार वॉटर क्लॉक (पानी की घड़ी) को भी बनाया था।

(13) **जाबिर बिन अफ़लाह** नाम के स्पेनिश-अरब साइंटिस्ट ने टोलमीज़ हिलियोसेंट्रिक थ्योरी ऑफ़ प्लानेटेरी मोशन पर अपनी क्रिटिकल नज़र पेश की थी।

(14) **अल-बीरुनी** वह पहले राइटर थे जिन्होंने कुछ खास ज्योलॉजिकल फ़ैक्ट्स को पहचाना था जैसे फार्मेशन ऑफ़ सेडीमेंट्री रॉक्स और उनके ज्योलॉजिकल चेन्जेज़ जिससे पता चलता है कि किस तरह पिछले ज़मानों में उनमें तबदीलियां होती हैं। ●



**Jabir Bin Hayyan**



**Umar Khayyam**



**Al-Biruni**



**Al-Kindi**



**Al-Zarqali**



# وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ

तफ़सीर

## मुश्किलों का हल

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ  
الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

(सूरए बकरा)

“सब्र और नमाज़ के ज़रिए मदद मांगो। नमाज़ बहुत मुश्किल काम है मगर उन लोगों के लिए जो खुदा से डरने वाले हैं। जिन्हें यह ख्याल है कि उन्हें अल्लाह से मुलाक़ता करना है और उस की बारगाह में वापस जाना है।”

आज हर आदमी इतने मसलों और मुश्किलों में घिरा हुआ है कि सुबह आंख खुलने के बाद से ही एक-एक करके सारे मसले सामने आने लगते हैं और आदमी उन्हें हल करने के लिए सोचना शुरू कर देता है। चाहे वह कोई बिज़नेसमैन हो जो अपने बिज़नेस के बारे में सोच रहा हो या कोई जॉब करने वाला अपनी जॉब के बारे में, घर का बुर्जुग हो या जवान, औरत हो या मर्द, सभी के सामने अपनी-अपनी मुश्किलें हैं और सब के सब उनके हल के लिए कोई न कोई रास्ता ढूंढते हैं। बहुत से लोग ग़ौर व फ़िक्र के बाद सही रास्ते तक पहुंच जाते हैं। वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिनके ज़ेहन में ग़लत हल आता है और वह उसी को अपना भी लेते हैं। आम तौर पर लोग अपनी परेशानियों में इतना ज़्यादा घिर जाते हैं और उनका ज़ेहन इतना परेशान हो जाता है कि वह

खुदा को छोड़ कर हर एक से मदद मांगने पर तैयार हो जाते हैं। नतीजे में हर आदमी कोई न कोई नया रास्ता बता देता है।

खुदावंदे आलम ने ऐसे हालात में हमें सहारा देते हुए कहा है कि सब्र और नमाज़ के ज़रिए मदद मांगो।

इमाम सादिक<sup>३</sup> फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली<sup>३</sup> को कोई मुश्किल पेश आती थी तो वह नमाज़ पढ़ते थे और इसी आयत की तिलावत करते थे।

इमाम हम लोगों से भी फ़रमाते हैं कि “जब

भी तुम्हें कोई रंज व ग़म या परेशानी हो तो वुजू करके मस्जिद जाओ और नमाज़ पढ़कर दुआ करो क्योंकि खुदा फ़रमाता है “सब्र और नमाज़ का सहारा लो।”

इस आयत में मुश्किलों का मुकाबला करने के लिए खुदा ने दो चीज़ों का हुक्म दिया है। एक नमाज़ और दूसरे सब्र। रिवायत में सब्र के एक मायने ‘रोज़ा’ भी बताए गए हैं।

नमाज़ खुदा से कनेक्शन का सिम्बल और निशानी है। यह खुदा से कनेक्शन ही है जो हमारी मुश्किलों का हल है। अगर हम अपनी मुश्किल में

■ फ़साहत हुसैन

تَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ  
الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ



खुदा के सामने हाथ फैलाएंगे तो:-

**1- दूसरों के सामने जलील व रुसवा नहीं होंगे** क्योंकि बहुत से लोग ऐसे हैं जो मदद मांगने वाले की मुश्किल तो दूर नहीं करते मगर उसके इस मदद मांगने को एक-एक से बताते फिरते हैं जिससे मदद मांगने वाले की बदनामी होती है।

**2- दिल को सुकून व इत्मिनान हासिल होगा**

अगर हम किसी मुश्किल में फंसे हों और कोई बड़ी शख्सियत हम से कह दे कि हम तुम्हारे साथ हैं तो हमें अपनी मुश्किल हल होती दिखाई देती है और हम ज़ेहनी उलझन से निजात पा जाते हैं। जाहिर है कि अगर हम खुदा से मदद मांगेंगे तो हम खुद को मुश्किलों के भंवर में अकेला नहीं समझेंगे बल्कि हमें इत्मिनान होगा कि खुदा हमारे साथ है जो हमें सही रास्ता दिखाता रहेगा।

**3- खुदा हमारी मुश्किल**

**दूर कर देगा**

अगर हमारी

दुआ में वह शर्तें पाई जाती हैं जो दुआ कुबूल होने के लिए ज़रूरी हैं तो खुदा हमारी दुआ कुबूल करेगा और हमारी मुश्किल और परेशानी दूर कर देगा। किसी ने अच्छी बात कही है कि खुदा हमारी दुआओं के तीन जवाब देता है :

1- हाँ।

2- हाँ! लेकिन अभी नहीं।

3- मैंने तुम्हारे लिए इससे बेहतर फैसला किया है।

**दूसरा हुक्म: सब्र**

रिवायत में सब्र के एक मायने 'रोज़ा' भी बताए गए हैं। रोज़ा इरादे की मज़बूती का एक सिम्बल है जिसमें रोज़ेदार अपनी मर्ज़ी से बहुत सी चीज़ों से खुदा की खातिर परहेज़ करता है। इसीलिए हमारे इमामों ने इस आयत की तरफ़ इशारा करते हुए कहा है कि जब मुश्किल हालात सामने आएँ तो रोज़ा रखो।

सब्र यानी सही रास्ते पर मज़बूती के साथ डटे रहना। घबराए बग़ैर पक्के इरादे के साथ आगे बढ़ना और अपने अंदर कमज़ोरी न आने देना।

मुश्किल हालात का सामना करने में यह क्वालिटी बहुत अहम रोल अदा करती है। क्योंकि सिर्फ़ किसी अच्छे रास्ते पर चलना काफी नहीं है बल्कि उस पर हमेशा चलते रहना ज़रूरी है। मुश्किलों में बहुत से लोग घबरा जाते हैं और मुश्किल दूर होती न देख कर सही रास्ते पर कुछ दूर चल कर उसे छोड़ देते हैं जबकि अगर उन्हें मालूम हो जाए कि अगर वह इसी रास्ते पर सब्र व मज़बूती के साथ कुछ वक़्त और चलते रहते तो उनकी मुश्किल बहुत जल्दी दूर हो जाती, तो उन्हें अफ़सोस होगा।

जो लोग मुश्किलों में सब्र और मज़बूती से काम नहीं लेते हैं वह ज़ेहनी तौर पर उलझे हुए भी

**1- गुनाह के वक़्त सब्र**

जब इन्सान के सामने गुनाह करने का वक़्त आ जाए और वह सब्र करते हुए उस गुनाह से बच जाए।

**2- मुसीबत पड़ने पर सब्र**

किसी मुसीबत में गिरफ़्तार होने के बाद वे वजह बेचैन रहने के बजाए सब्र व हौसले से काम लेना।

**3- खुदा की इताअत के वक़्त सब्र**

यूँ तो रोज़े में सब्र का पहलू ज़्यादा दिखाई देता है लेकिन हर इबादत और खुदा के हर हुक्म की इताअत करने में सब्र ज़रूरी है।

इसी वजह से फ़रिश्ते जन्नत में जाने वाले लोगों से यह कह कर सलाम नहीं करेंगे कि

तुमने नमाज़, रोज़ा, हज और दूसरी

इबादतें की हैं इसलिए तुम पर

सलाम हो बल्कि वह कहेंगे,

“तुमने सब्र किया है

इसलिए तुम पर

सलाम हो।” (सूरए

राद/26)

ऊपर वाली

रिवायत में जिन

तीन जगहों पर

सब्र करने के

लिए कहा गया है

उन तीन मौकों पर

सब्र करके हम बहुत

सी परेशानियों से बच

सकते हैं।

यह एक तरह से सब्र का

सहारा लेना और सब्र से मदद

मांगना है।

आयत में मुश्किलों में नमाज़ और सब्र का सहारा लेने का हुक्म देने के बाद खुदा फ़रमाता है कि जिन लोगों के दिल में खुदा का डर नहीं है उन्हें यह नमाज़ एक बोझ लगती है।

खुदा से डरने वाले लोग कौन हैं? यह वह लोग हैं जिन्हें पता है कि उन्हें अपने खुदा से मिलना है और उसी की बारगाह में वापस जाना है। वरना जिन लोगों ने खुदा और क़यामत को भुला दिया है वह नमाज़ को एक बोझ समझते हैं।

खुदा से दुआ है कि हम परेशानियों में भी खुदा से दूर हों और नमाज़ और सब्र के ज़रिए उससे मदद मांगते रहें। ●

रहते

हैं जिससे मुश्किल हल करने के सही रास्ते भी उनके ज़ेहन में नहीं आते लेकिन अगर इंसान खुदा से राब्ता रखने के बाद सब्र से काम ले और बेचैनी और घबराहट का शिकार न हो तो वह सुकून और इत्मिनान के साथ सही हल के बारे में सोच सकता है।

इसके अलावा कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जो लोग परेशानियों में सब्र नहीं करते हैं वह इतनी ज़्यादा बेचैनी का शिकार हो जाते हैं कि खुद यह बेचैनी और उलझन असली मुश्किल से ज़्यादा बड़ी मुश्किल बन जाती है।

रिवायत में सब्र की तीन किस्में बताई गई हैं :



## इमरजेंसी में बच्चे की जान कैसे बचाएं?

बच्चों के साथ हादसे होते रहते हैं। अगर आप फर्स्ट-एड की बुनियादी बातों को जानती हैं तो बच्चे को किसी बड़े ख़तरे से बचाया जा सकता है! क्योंकि बहुत बार ऐसा होता है कि यह ज़िन्दगी और मौत का सवाल बन जाता है। हादसे कहकर नहीं आते, हादसे तो सेकेन्डों में होते हैं लेकिन उनके असर कभी-कभी ज़िन्दगी भर रहते हैं। तो फिर क्यों न आप कुछ काम की बातें जान लें जिनसे आपको पता चल जाएगा कि बहुत ज़्यादा इमरजेंसी में क्या करना चाहिए।

### खौलते पानी, तेल या भाप से जलने पर

ऐसी सूरत में फर्स्ट एड का मतलब जलन को कम करना, दर्द में आराम पहुंचाना और सूजन में कमी करके इंफेक्शन के ख़तरों से बचाना होता है। जले हुए हिस्से पर दस मिनट तक ठंडे पानी की धार छोड़ दें। दूध पीते बच्चे के जिस्म के जले हुए हिस्से को पानी में न डुबोएं क्योंकि इससे

हाइपोथर्मिया हो सकता है।

जब जलन में थोड़ी सी कमी हो जाए तो जले हुए हिस्से के ऊपर से कपड़ा हटा दें। अगर खाल से कोई चीज़ चिपक गई हो तो उसे भी चारों तरफ से काट लें। सूजन से पहले ही कपड़ा या ज़ेवर जो चीज़ भी पहने हुए हो उसे उतार लें। उस हिस्से को किसी साफ़ कपड़े से ढांप दें। कपड़ा रूएंदार न हो, सूती हो तो सबसे बेहतर है। अगर हाथ या पैर जल गया हो तो उस पर सूती कपड़ा बांध कर पॉलीथिन बैग लपेट दें। अगर छाले पड़ गये हों तो उन्हें न तो फोड़ें और न ही कोई क्रीम या मरहम उन पर लगाएं।

खास तौर पर मुंह और गर्दन का जलना ज़िन्दगी और मौत का मसला बन सकता है क्योंकि उससे सूजन भी हो सकती है और सांस लेने में बहुत दुश्वारी भी पेश आ सकती है। ऐसी सूरत में गर्दन में लिपटे हुए कपड़े को ज़रा ढीला कर दें और हो सके तो ठंडे पानी की चुस्कियां दें और एम्ब्रूलेस बुला लें। इस बीच बच्चे की घबराहट दूर करने के लिए उसे बराबर दिलासा भी देती रहें।

### हलक में फंदा पड़ जाने पर

अगर हलक में कोई चीज़ फंस गई हो और वह आप को नज़र भी आ रही हो तो उसे बहुत ध्यान से एक उंगली की मदद से निकाल लें लेकिन हलक के पिछले हिस्से को बिल्कुल भी न छुएं। उससे सूजन हो सकती है और सूजन के नतीजे में सांस की नाली बंद हो सकती है। न ही उस जगह को उंगलियों की मदद से अंधाधुंध टटोलें। इस तरह हलक में फंसी हुई वह चीज़ और भी नीचे चली जाएगी।

### दूध पीते बच्चे

बच्चे को अपने बाजूओं पर औंठे मुंह लिटाएं।

उसका सर नीचे हो और कोई सहारा हो। उसके मोढ़े के बीच पांच बार ज़ोर-ज़ोर से थपथपाएं। अगर इस तरह काम न बने तो बच्चे को उसकी पीठ के बल लिटा दें। उसके मुंह को चेक करें। फिर उसकी पसली से ज़रा ऊपर दो उंगलियां रख कर हर तीन सेकेन्ड पर सर की तरफ ज़ोर से झटके दें। फिर मुंह को चेक करें और इस को तीन बार दोहराएं। जब तक मेडिकल हेल्प नहीं पहुंचती इस अमल को दोहराते रहें।

### एक साल से ज़्यादा उम्र के बच्चे

बच्चे से कहें कि वह ज़ोर से खांसे। अगर इस तरह काम न बने तो बच्चे को इस तरह झुकाएं कि उसका मुंह और सर सीने से नीचे हो और उसके मोढ़े के बीच पांच बार ज़ोर-ज़ोर से थपथपाएं और फिर मुंह को चेक करें। अगर थपथपाने से काम नहीं बनता तो सीने पर झटका मार कर देखें। बच्चे के पीछे या तो खड़े हो जाएं या घुटनों के बल बैठ जाएं। एक हाथ की मुट्ठी बनाएं और बच्चे की नाफ़ और पसली के बीच रखें। मुट्ठी को दूसरे हाथ से पकड़ें और पसली के पांच धक्के ऊपर और नीचे मारें। इस को तीन बार दोहराएं। अगर फिर भी काम न बने तो डाक्टर के पास फौरन ले जाएं लेकिन मदद पहुंचने तक इस अमल को जारी रखें।







### खून बहने पर

अगर ज़ख्म में कोई चीज़ चुभी हुई न हो तो खून को बहने से रोकने के लिए हाथ या उंगलियों से देर तक दबाएं। ज़ख्म को एक साफ सुथरे पैड या बैक्टीरिया से پاک पट्टी से दबाए रखें और ज़ख्मी हिस्से को दिल के लेवल से ऊंचा कर दें। बच्चे को इस तरह लिटा दें कि ज़ख्मी हिस्सा उठा हुआ रहे और दस मिनट तक ज़ख्म को दबाए रखें। जब खून बहना बंद हो जाए तो पट्टी ज़ख्म पर बांध दें। लेकिन पट्टी इतनी सख्ती से न बांधें कि खून का दौरान रुक जाए। अगर ज़ख्म से खून रिसने लगे तो पहली पट्टी के ऊपर दूसरी पट्टी बांध दें। लेकिन अगर खून रिसना फिर भी बंद न हो तो ऊपर की पट्टियों को हटा कर नई पट्टियां बांधें।

अगर ज़ख्म में कोई चीज़ चुभी हुई हो तो एक साफ पट्टी को बहुत हल्के से ज़ख्म के ऊपर रखें और उसके चारों तरफ पैड रखें यहां तक कि पैड इस चुभी हुई चीज़ से ऊंचा हो जाए। अब पैड पर हल्के-हल्के पट्टी बांध दें। यह ख्याल रहे कि चुभी हुई चीज़ और अंदर न चली जाए। इस ज़ख्मी हिस्से को दिल के लेवल से ऊपर रखें।

### ज़हर खा लेने पर

हर साल हजारों बच्चे ज़हर खाने की वजह से अस्पताल पहुंचते हैं। इनमें से बहुत से बच्चे पांच साल से कम उम्र के होते हैं। यह जानने की कोशिश करें कि बच्चे ने क्या चीज़ निगली थी और उसके मूंह में अगर कोई चीज़ हो तो उसे निकाल दें। अगर निगली जाने वाली चीज़ कोई घुला देने वाला केमिकल था तो बच्चे को पानी या दूध की खूब

चुस्कियां दें। बच्चे को उल्टी न करने दें। वरना उससे और ज़्यादा नुकसान पहुंच सकता है। फौरन किसी डाक्टर को फोन करें और उससे मशवरा करें। अस्पताल जाएं तो वह बोतल, पैकेट या जो भी ज़हरीली चीज़ बच्चे ने खाई हो अपने साथ ले जाएं। अगर बच्चे ने उल्टी की थी तो उसका नमूना भी साथ लेती जाएं।

### पानी में डूबने की सूरत में

दूध पीते बच्चे अगर एक इंच पानी में मुंह के बल गिर जाए तो मर सकते हैं। बच्चे को पानी से निकालें। उसे इस तरह उठाएं कि उसका सर सीने से नीचे की तरफ हो ताकि पानी उसकी सांस की नाली में न चला जाए। बच्चे के गीले कपड़े उतार



कर उसे तौलिए या कम्बल में लपेट दें। ज़रूरी समझें तो उसे होश में लाने की कोशिश करें और फौरन डाक्टर को कॉल करें। बच्चे को हमेशा अस्पताल में इमरजेंसी में ले जाएं। अगर बच्चे की हालत संभली हुई नज़र आ रही हो फिर भी, क्योंकि हो सकता है कि पानी ने उसके फेफड़ों को बहुत ज़्यादा नुकसान पहुंचाया हो।

### सर पर चोट लगने पर

सर की चोट की तीन ख़ास किस्में हैं: दिमागी चोट, दबाव (Compression) और खोपड़ी का टूटना (Skull fracture)। इन तीनों किस्मों की चोटों को मामूली नहीं समझना चाहिए बल्कि बड़ी संजीदगी से इनका इलाज कराना चाहिए। अगर दिमागी चोट लगी हो या थोड़ी देर के लिए भी बेहोशी हो गई हो तो फौरन मेडिकल हेल्प के लिए कॉल करें। अगर बच्चा कुछ सेकेन्ड से ज़्यादा देर तक बेहोश रहा हो तो उसके जबड़ों पर दबाव डाल

कर सांस की नाली खुली रखने की कोशिश करें। बच्चे के पीछे घुटनों के बल बैठ जाएं और अपने हाथ उसके कानों पर रख लें। बच्चे का सर, गर्दन और रीढ़ की हड्डी बिल्कुल सीध में हो। आपके दोनों हाथ बच्चे के चेहरे के दोनों तरफ हों और उंगलियां जबड़ों के रुख पर हों। अब जबड़ों को नमी से इस तरह उठाएं कि गर्दन ढलकने न पाए ताकि सांस की नाली खुल जाए। यह उस सूरत में है कि चोट गर्दन की भी हो इसलिए बच्चे को होश में लाने के लिए तैयार रहें।

Compression अंदरूनी खून के निकलने या सूजन की वजह से दिमाग पर पड़ने वाले प्रेशर से होती है। इसके असर चोट लगने के घंटों बाद या कई दिनों के बाद भी सामने आ सकते हैं। उसकी निशानियां यह हैं: ज़ेहनी उलझन, तेज़ सर का दर्द, सांस चलने की रफ़्तार धीमी पड़ना और शोर करती हुई नब्ज़ मगर रफ़्तार धीमी, आंखों की पुतलियां बराबर न होना और कमज़ोरी या फालिज।

खोपड़ी के फ्रैक्चर की निशानियां ज़्यादातर वही हैं जो Compression की हैं और कभी-कभी उससे भी ज़्यादा। इसलिए ऐसी सूरत में फौरन डाक्टर से मिलना ज़रूरी है। ●







# सच्चाई

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

सच्चाई और ईमानदारी से ही एक इंसान, इंसान बनता है। असल में यह दोनों एक ही हैं क्योंकि सच्चाई बातचीत के बीच अमानतदारी के अलावा और कुछ नहीं है। इसी तरह अमानतदारी काम में सच्चाई बरतने ही का दूसरा नाम है। और इन दोनों के समाजी एतेबार से असरात भी करीब-करीब एक ही जैसे हैं। शायद यही वजह है कि रिवायात व अहदीस में सच्चाई और अमानतदारी का जिक्र साथ-साथ हुआ है।

## सच्चाई की अहमियत

ऊपर बयान किया जा चुका है कि सच्चाई इन्सान की शख्सियत, अज़मत, ऊंची सोच और पाक रूह की खुली निशानी है। सच बोलने वाले लोग आम तौर पर बहादुर, मुखलिस, बेझिझक होने के साथ तास्सुब, मुहब्बत और नफरत में ज़्यादती से परहेज़ करने वाले होते हैं। क्योंकि सच्चाई इन चीज़ों के बगैर पाई ही नहीं जा सकती है। इसके उलट झूठ बोलने वाले लोग आम तौर पर डरपोक, मक्कार, लालची, मुतास्सिब और मुहब्बत व नफरत में ज़्यादती करने वाले होते हैं।

सच बोलने वाले लोग अपनी ज़िंदगी में हमेशा कुछ उसूलों के पाबंद होते हैं। ऐसा बहुत कम होता है कि यह लोग वक़्त के साथ

तबदील होने वाले, हालात के तहेत मिज़ाज बदलने वाले या मुनाफ़िक हों क्योंकि सच इनमें से किसी एक के साथ भी जमा नहीं हो सकता। और झूठ की बुनियाद यही चीज़ें होती हैं।

सच्चाई को किसी शख्स के बातिन और उसकी शख्सियत के अलग-अलग पहलुओं को

समझने का बेहतरीन ज़रिया समझा जा सकता है। इमाम जाफ़र सादिक<sup>१</sup> फ़रमाते हैं, “किसी शख्स के लम्बे-लम्बे रूकू व सजदों की तरफ़ मत देखो क्योंकि हो सकता है वह अपनी आदत की वजह से ऐसा कर रहा हो कि अगर उन्हें छोड़ देगा तो उसे परेशानी होगी बल्कि अगर देखना है तो उसकी

सच्चाई और अमानत को देखो।<sup>(1)</sup>

इस सिलसिले में कुरआने मजीद में है, “और उनकी बातचीत के अंदाज़ से तो बहेरहाल पहचान ही लेंगे।”<sup>(2)</sup>

## सच्चाई का असर और फ़ायदे

समाजी एतेबार से सच्चाई व अमानत का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि इसके ज़रिए समाज में इत्मिनान व भरोसा पैदा होता है। हम जानते हैं कि आज जितनी भी सांइटिफ़िक या इंडस्ट्रियल और फ़ाइनैशल तरक्की हो रही है उसका सेहरा इसी समाजी ज़िंदगी के सर बंधता है जिसमें लोग एक दूसरे पर पूरी तरह इत्मिनान व भरोसा करते हों और अगर ऐसा नहीं होगा तो समाजी ज़िंदगी का ख़ात्मा आपसी झगड़ों, लड़ाईयों, नसली इख़्तेलाफ़, और अलग-अलग तरह की कशमकशों पर होगा। इस सूरत में समाजी ज़िंदगी से फ़ायदे के बजाए नुक़सान ही हासिल होंगे। बिल्कुल साफ़ है कि इत्मिनान व भरोसे के







# रिश्तों की एहमियत

■ अनम रिज़वी

पैदा होने का अहम तरीन और असरदार ज़रिया यही सच्चाई और अमानतदारी है जबकि इसके उलट इसका सबसे ख़तरनाक दुश्मन झूठ का रिवाज है।

अगर कोई फ़ैक्ट्री या कम्पनी अपनी किसी नई ईजाद या प्रोजेक्ट के बारे में पब्लिक के साथ ग़लत बयानी से काम ले तो पब्लिक उस कम्पनी के दूसरे बेहतरीन और मशहूर प्रोजेक्ट के बारे में ग़लत नज़रिए बना लेगी। अगर कोई हुकूमत झूठ बोले तो पब्लिक उसके वादों, ऐलानों और किसी भी किस्म के ख़तरे के बारे में वार्निंग को संजीदगी से नहीं सुनेगी और इस तरह ऐसी हुकूमत पब्लिक से दूर हो जाएगी।

अगर इल्मी माहौल और सोसाइटी में झूठ रिवाज पा जाए तो टीचर और स्टूडेंट एक दूसरे की बातों, इवेंट्स, तन्कीदों और रिसर्च पर बिल्कुल भरोसा नहीं करेंगे। और ऐसे में यह होगा कि हर शख्स को अपनी किसी रिसर्च से जुड़कर तमाम ज़हमतें खुद ही बर्दाश्त करनी पड़ेंगी और वह पिछले लोगों की हज़ारों सालों की रिसर्च से भी कोई फ़ायदा नहीं उठा पाएगा। इस तरह का इल्मी झूठ बदतरीन और ख़तरनाक तरीन झूठ शुमार किया जाएगा।

**झूठ: बहुत से गुनाहों की जड़**

रिवायतों में नक़ल हुआ है कि सच्चाई और अमानत 'अमल की पाकीज़गी' और झूठ गुनाहों का सोर्स है। हो सकता है कि कुछ लोगों के लिए इस बात का समझना मुश्किल हो कि सच और झूठ दूसरे इंसानी कैरेक्टर और कामों पर भी अपना असर छोड़ सकते हैं।

हज़रत इमाम अली<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, “सच्चाई नेकी की तरफ़ हिदायत करती है और नेकी ज़न्नत की तरफ़।”<sup>(3)</sup>

इमाम जाफ़र सादिक<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, “जब कोई बंदा सच बोलता है तो खुदा फ़रमाता है कि उसने सच कहा और नेक काम किया और अगर वह झूठ बोलता है तो फ़रमाता है कि उसने झूठ कहा और बुरा काम किया।”<sup>(4)</sup>

इमाम हसन असकरी<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, “सारी बुराईयाँ एक कमरे में इकट्ठा कर दी गई हैं जिनकी कुन्जी झूठ है।”<sup>(5)</sup>

इस हदीस से भी साफ़ हो जाता है कि झूठ तमाम बुराईयों और गुनाहों की कुन्जी है।

1-बिहार, 71/8, 2-सूरए मुहम्मद/30, 3-मिशकात/157,

4-मिशकात/156, 5-बिहार, 72/263

रिश्ते हमारी ज़िन्दगी में बहुत एहमियत रखते हैं। ख़ासकर रिश्तों का सामना ज़्यादातर औरतों को करना पड़ता है। एक माँ, सास, बेटी, बीवी, बहु बनना बहुत आसान है पर इन्हें निभाना बहुत मुश्किल है। एक अच्छा रिश्ता बनाने के लिए हमें कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है पर यह इतना मुश्किल भी नहीं। हमें सबसे पहले रिश्तों की एहमियत समझनी चाहिए। कई जगह रिश्ते बराबर के होते हैं जैसे हज़बैंड और वाइफ़ का रिश्ता, दोनों ही हमेशा अपनी बात को सही जताना चाहते हैं। जिससे उनके बीच सिर्फ़ दूरियाँ आती हैं। इन दोनों को एक दूसरे की बात सुनना चाहिए और आपस में बात करके कोई भी फैसला करना चाहिए क्योंकि यह गाड़ी के दो पहियों की तरह होते हैं और अगर एक भी पहिया ख़राब हो जाए तो गाड़ी नहीं चलती इसी तरह इन दोनों के बिना घर भी नहीं चलता।

मेरी नज़र में सबसे नाजुक रिश्ता सास-बहू का होता है क्योंकि हज़बैंड-वाइफ़ तो एडजस्ट कर लेते हैं पर सास-बहू में ज़्यादातर अनबन देखी जाती है। क्या आपने सोचा है कि ऐसा क्यों होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन दोनों में सिर्फ़ सास-बहू का रिश्ता होता है। इन दोनों में यह ज़रूरी है कि यह दोनों माँ बेटी की तरह रहें। बहू को अपनी सास को माँ मानना

चाहिए पर इसके लिए ज़रूरी है कि सास भी बहू को बेटी समझे। तभी यह एक अच्छी सास-बहू साबित होगी। एक और रिश्ता बहुत अहम होता है और वह है माँ बेटी का। माँ बेटी हमेशा एक दूसरे से बहुत प्यार करते हैं इसमें कोई शक नहीं है पर कई बार ऐसे हालात पैदा हो जाते हैं कि दोनों एक दूसरे को समझ नहीं पाते। माँ तभी एक अच्छी माँ कहलाएगी जब उसने अपनी बेटी की अच्छी परवारिश की हो और दुनियावी तालीम के साथ दीनी तालीम भी हासिल करवाई हो क्योंकि दुनियावी तालीम जितनी ज़रूरी है उससे भी ज़्यादा दीनी तालीम ज़रूरी है। माँ को खुद के परदे के साथ बेटी के पर्दे पर भी ध्यान रखना चाहिए कि अगर माँ पर्दा करती है और बेटी नहीं तो इसका जवाब माँ को भी अल्लाह के यहां देना होगा। इसी तरह बेटी को भी अपनी माँ की छोटी-छोटी खुशियों का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि बेटी की छोटी-छोटी बातें माँ को बड़ी-बड़ी खुशियाँ दे सकती हैं जैसे माँ की बर्थ डे या एनिवर्सरी को याद रखना।

इसी तरह आप एक अच्छी बेटी साबित हो पाएंगी। हमें सब से पहले रिश्ते की गहराई को समझना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि क्या हम एक अच्छी माँ, बेटी, सास, बहु या बीवी बन पाए हैं। ●



दूसरे

7 साल



■ इंजीनियर हसन रज़ा नक्वी

तालीम और तरबियत एक दूसरे के बिना पूरे ही नहीं हो सकते। जैसे 'फ़ाईव-सेंसेस' के बिना दुनिया की तमाम लज़्ज़तें और खुदा की तमाम नेमतें बेफ़ायदा हैं वैसे ही तरबियत के बिना तालीम बेफ़ायदा है। इसीलिए इस सीरीज़ के पिछले आर्टिकल में लिखा गया था कि खुद मासूमीन ने शुरू के सात साल में बच्चे की तालीम से ज़्यादा उसकी तरबियत पर ज़ोर दिया है।

इस इशू में बच्चे के सात साल के बाद से आगे आने वाले सात साल की जिंदगी और अपनी ज़िम्मेदारियों के बारे में बात करना है।

आज के एजुकेशनल सिस्टम के एतेबार से सात साल का बच्चा दूसरी या तीसरी क्लास में आ जाता है। हम लोग जब पढ़ते थे तो हाईस्कूल अहम माना जाता था मगर अब ज़्यादा तर बोर्ड आठवीं क्लास को अहम मानते हैं। बच्चा किस ट्रेड में जाने वाला है ये आठवीं क्लास तय करती है। आज के दौर में बहुत सी ब्रांचेज़ के रास्ते खुलने के बाद भी चार अहम रास्ते माने जाते हैं (1) Bio-Group (2) Maths Group (3) Commerce Group और आखिरी है Arts। इन्हीं चार से सारी ब्रांचेज़ निकलती हैं और ये रुजहान आम तौर पर तीसरी-चौथी क्लास से समझ में आने लगता है।

पैरेंट्स को ये बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कोई भी ट्रेड-स्पेशलाइज़ेशन बुरा नहीं है ज़रूरत है Excellence की। ये बात पहले आ चुकी है कि न सारे डाक्टर्स कामयाब हैं और न सारे इंजीनियर्स। तरक्की के लिए वैसे भी सिर्फ एजुकेशन काफी नहीं है और फिर उस पर वह एजुकेशन जो ज़बरदस्ती सर पर थोप दी जाए। मिसाल दे दूँ कि एक बच्चा जो आर्ट (Drawing) में रुजहान रखता है वह कैसे Physics की Definitions और Chemistry के Derivations पर पकड़ बना सकता है। इसी तरह Maths के

सवाल लम्हों में हल करने वाला बच्चा कैसे हिस्ट्री बन चुके लोगों को रटेगा या मुल्कों की आए दिन बदलने वाली सरहदों को याद रख पाएगा!

इसलिए रुजहान को देख कर उसी पर मेहनत कराई जाए ताकि आठवीं क्लास आते-आते वह अपने शौक के Subjects में माहिर हो जाए।

इसी उम्र में एक और 'अहम तरीन' पहलू है जो शायद ज़्यादा तर पैरेंट्स के लिए फ़िक्र की वजह बना रहता है। "हमारा बच्चा सिर्फ खेलना चाहता है" या "सिर्फ कम्प्यूटर पर बैठा रहता है" या "सारे खिलौने और घर के सामान बर्बाद कर देता है"। ये तीनों सर-दर्द एक Genius बच्चे की क्वॉलिटीज़ हैं और ये तीनों चीज़ें ही कामयाब Student बनाते हैं। बस फ़र्क ये है कि कितना रोका जाए और कितना नज़रअंदाज़ किया जाए। मैं पैरेंट्स को बता दूँ कि Sports, Culture और Co-curricular Activities वह चीज़ें हैं जो बच्चों की कामयाबी में 90% शामिल होती हैं। सिर्फ 'पढ़ाकू' बच्चे बहुत कम (Exceptions are

there) कामयाबी की बुलन्दियों तक पहुँच पाते हैं।

खेल के दुश्मन तो क़रीब-क़रीब सारे ही पैरेंट्स होते हैं जबकि खेल के बग़ैर सेहत नहीं और सेहत के बग़ैर काम नहीं। बच्चे का नेचर है खेल...और आप उसे खेल से रोक कर नेचर से रोक रहे हैं। या ये कि बेचारा क्रिकेट का शौकीन है तो तेन्दुलकर बनोगे? फुटबाल खेलता है तो मेसी बनोगे? या बच्ची Cultural Activities में है तो फ़िल्मी एक्ट्रेसस का ताना। आज हर अहम जॉब में ये तीनों चीज़ों यानी Sports, Culture or Co-curricular Activities आपकी पढ़ाई के Certificates को ज़बरदस्त तरीक़े से Support करते हैं। और ये सारे कमाल और स्किल्स बच्चे में 10-11 साल से बाक़ायदा नज़र आने लगते हैं।

आज के लिए आखिरी बात...

दुनिया आखिरत की खेती है, इसलिए ये ध्यान में रहे कि खेती बर्बाद न हो जाए क्योंकि इबादत का शौक भी इसी उम्र से जगाया जा सकता है, बाद में नहीं...! ●







वीमेन राइट्स

# यूरोप तो हम से ज़्यादा परेशान है

■ शहीद मुतहहरी

फैमिली और घरेलू ताल्लुकात की मुश्किलों का हल इतना आसान नहीं है कि जैसे आज कल के लड़के-लड़कियों को फार्म दे दिये जाते हैं कि उन्हें भर दें या इस सब्जेक्ट पर सेमिनार किए जाएं। फिर यह भी है कि यह मुश्किलें सिर्फ हमारे ही मुल्क में फैली हुई नहीं हैं, इन्हें दूसरे मुल्क भी हल नहीं कर सके हैं, और न ही किसी ने अभी तक इनका हकीकी और असली हल पेश करने का दावा किया है।

मशहूर फलसफी और राईटर, विल डियोरेंट अपनी किताब 'दि हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेशन' में लिखते हैं, "फर्ज करें कि हम 2000 ई. में हैं। और मालूम यह करना चाहते हैं कि बीसवीं सदी के शुरू के चौथाई में सबसे बड़ा वाक़ेआ क्या हुआ था? उस वक़्त हमें अंदाज़ा होगा कि वह वाक़ेआ जंग या रूस का इंक़ेलाब नहीं, बल्कि सबसे बड़ा वाक़ेआ औरतों की हालत में तबदीली है। ऐसा झटका लगाने वाला वाक़ेआ और वह भी छोटी से पीरियड में तारीख ने बहुत कम देखा होगा।"

हमारा प्यारा घर जो हमारे समाजी सिस्टम का बुनियादी पत्थर था दरहम बरहम हो गया। मियां-बीवी का आपस में वह रिश्ता नहीं रहा जो हवस और बुराईयों के रास्ते में एक रुकावट था। वह पेचीदा अख़लाकी उसूल ख़त्म हो गए जिन्होंने हमें जंगली ज़िंदगी से कल्चर व समाजी आदाब सिखाए थे। और अब खुल्लम खुल्ला हम उस अख़लाक़ को छोड़ कर ऐसे माहौल में आ चुके हैं, जहां ज़िंदगी की शक़ल व सूरत और सोच व ज़ेहन

सब कुछ एक शिकंजे में है।

फैमिली सिस्टम की बर्बादी, शादीशुदा रिश्तों की कमज़ोरी, जवानों का शादी के बोझ को उठाने से भागना, मां-बाप के रिश्ते से नफ़रत, औलाद से मां-बाप के ताल्लुकात में दरार ख़ास कर मादरी ताल्लुक़ का टूटना...आज की औरत का शराफ़त से पीछा छुड़ाकर घटिया किस्म की इश्क़बाज़ी पर उतर आना, रोज़ाना बढ़ती हुई तलाक़ का ज़ोर, मियां-बीवी में खुलूस व मुहब्बत की कमी... इस सदी के आखिरी चौथाई में बड़े ज़ोर व शोर और हंगामे से सुनाई दे रही है।

**आज़ाद रहें या पश्चिमी दुनिया की तक्लीद करें?**

अफ़सोस की बात है! कुछ बेख़बर लोगों ने यह समझ रखा है कि घरेलू ज़िंदगी के मसले ऐसे ही हैं जैसे एक ज़माने पहले ही यूरोप में टैक्सी, बस, ट्रैफ़िक कंट्रोल, हाऊस वाटर या बिजली वगैरा की मुश्किलें ख़त्म या आसान हो चुकी हैं। इसी तरह यह घरेलू मसले भी हमारी ही नालाएकी की वजह से हल नहीं हुए हैं। इसलिए इस मामले में हमें यूरोप की तक्लीद व पैरवी कर लेना चाहिए।

दरअसल यह एक ग़लत फ़हमी है। आज भी यूरोप वाले इन मसलों में हम से ज़्यादा जकड़े हुए हैं। उनके समझदार लोग बुरी तरह से चीख़ रहे हैं,







# आपके लैटर्स

गर्ल्स एजुकेशन के मामले में लेकर तमाम मामलों में यूरोप वालों की परेशानियां हम से कहीं

ज्यादा हैं। और घरेलू खुशनीसीबी तो उन्हें नसीब ही नहीं है।

कुछ लोग समझते हैं कि घरेलू जिंदगी में उठा-पटक और लड़ाई-झगड़ों की वजह औरत की आजादी है और औरतों की आजादी का नतीजा है, इल्म व कल्चर का फैलाव और टेक्नोलॉजी व इंडस्ट्रीज की तरक्की। यह एक तारीखी सच्चाई है जिसे बर्दाश्त करना पड़ेगा। जिसके बाद हमें इस उठा-पटक और लड़ाई-झगड़ों और पुराने ज़माने की घरेलू खुशहाली से दूर हो जाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अगर हमारी यह सोच है तो बड़ी सस्ती और घटिया सोच है। ठीक है कि आज की तरक्की ने हमारी जिंदगी और घरेलू ताल्लुकात पर बहेरहाल असर डाला है और यह असर पड़ता रहेगा। लेकिन यूरोप के अंदर घरेलू रिश्तों की टूट-फूट में दो और चीजों का भी दखल है :-

एक वह रस्म व रिवाज जो ज़ालिम क़ानून और जाहिलाना उसूलों के तौर पर इस सदी से पहले उनके यहां पाए जाते थे और हद यह है कि औरत को पहली बार उन्नीसवीं सदी या बीसवीं सदी के शुरू में मालिकाना हक़ दिया गया है। यानी यूरोप में उसे मालिक मानने का ज़माना अब आया है।

दूसरी बात सोशल रिफ़ॉर्मस की है। जो लोग औरतों के हक़ में बेहतरी पैदा करने उठे वह ऐसी राह चले जो आज कल हमारे यहां कुछ लोगों ने चुन रखी है। यह लोग औरत की भंवे बनाने-संवारने उठे मगर इस चक्कर में यह उसकी आंखें फोड़ बैठे।

इस बारे में मशीनी जिंदगी पर इल्ज़ाम लगाने से अच्छा है कि यूरोप के उन पुराने क़ानूनों को बुरा कहा जाए जो उस वक़्त लागू थे और इस तबाही व बर्बादी का बोझ माडर्न किस्म के उन लोगों के कंधों पर रखा जाए जिन्होंने नए रिफ़ॉर्मस का ढोंग रचाया। इसलिए हम एशिया के रहने वालों को इस बात की ज़रूरत ही नहीं है कि हम भी उसी रास्ते पर चलें जिस पर वह चल चुके हैं और जिस दलदल में वह फंसे हम भी उसी में फंसे। हमें यूरोपियन जिंदगी की स्टडी बड़ी होशियारी से करना चाहिए। टेक्नालॉजी, इंडस्ट्रीज और समाजी क़ानून जो भी अच्छे लगें, उन्हें ग़ौर से देखें। उन्हें कुबूल करने, उनकी तक़लीद करने और उनके रस्म व रिवाज और कायदे-क़ानूनों को अपनाने में उन हज़ारों बदनसीबियों पर भी नज़र रखें जिन में यूरोप वाले आज घिरे हुए हैं। ●

## सलामुन अलैकुम

‘मरयम’ का हर एक इशू मुफ़ीद से मुफ़ीद तर होता जा रहा है। मुझे सादात, मुजफ़्फ़र नगर के परधान, सै. ज़िल्ले हसनैन एडवोकेट साहब ने मरयम को पढ़ने के बाद मुझे बताया कि मरयम के अंदर जो बातें लिखी हैं वह किरदार तो मुझे कहीं नज़र नहीं आता। यानी आपकी मैगज़ीन किरदार साज़ी के लिए एक कसौटी लगती है। परधान जी की नज़र में आपकी टीम कामयाब है और एक अलग तरह की ख़िदमत अंजाम दे रही है।

मौलाना हैदर अब्बास नक्वी, नौगांवा सादात

## Salamun Alaikum

This is to acknowledge that today I received the September issue of MARYAM.

Thank You All for this great support. Believe me , me and my family waits for Maryam every month. This is really a good magazine which covers almost every aspect of general life cycle.

I wish to Good Luck.

Best Regards,  
Farhat Mahdi  
Patna

## एडीटर साहब

### सलामुन अलैकुम

माशाअल्लाह काफी अच्छे-अच्छे आर्टिकल्स पढ़ने को मिल रहे हैं। एक मैगज़ीन में घर के हर मिम्बर के लिए तक़रीबन कुछ न कुछ मिल ही जाता है।

अभी तक मैंने हिन्दुस्तान में अपने लोगों के बीच ऐसी मैगज़ीन नहीं देखी है।

खुदा आप लोगों की ज़हमतों को कुबूल फ़रमाए!

मोहम्मद याक़ूब  
उदयपुर



## कहानी

### रफी इफतेखार

था शुजा अली। जब कभी वह बी अम्मा से मिलने आता और मुझे चीखते-चिल्लाते देखता तो मुझ से हमदर्दी जताता और बी अम्मा से कहता कि क्यों इस बच्चे के पीछे पड़ी हुई हैं। इसीलिए वह मुझे बहुत पसंद थे। आज की कहानी का मेन कैरेक्टर वही हैं। सोसन भाभी से उनकी शादी को दस साल हो चुके थे।

हर तरफ़ कानाफूसियां हो रही थीं। कोई कह रहा था, “बेचारी बहुत बदकिस्मत है।” किसी की आवाज़ आती, “पता नहीं अब क्या होगा।” कोई कहता था, “अब तो किस्सा ही खत्म।” “बेचारी क्या करे उसके हाथ में तो है नहीं जो खुदा की मर्जी।” एक और ने उसकी बेचारगी पर तरस खाते हुए हमदर्दी जताई।

यह सब बातें इसलिए हो रही थीं कि आज ही सबको मालूम हुआ था कि सोसन के यहां खेलने वाला पांचवा फूल भी बेटा नहीं बल्कि बेटी है।

वह भी यह खबर सुनकर तड़प कर रह गई थीं। सास और नन्दों ने तो यह सुनते ही अस्पताल से घर की राह ली थी और अभी पैदा हुई बच्ची को देखना भी गवारा नहीं किया था।

“अरी! आने दे ज़रा शुजा को। मैं तो पिछले चार साल से कह रही हूँ कि इस कलमुंही से हमारा कोई नाम लेवा पैदा होने वाला नहीं है। लेकिन जाने इस शुजा को क्या हो गया है।” घर आते ही सास ने बैन करने और ताने देना शुरू कर दिए थे।

मुझे याद है बी अम्मा ने सोसन के शौहर शुजा अली को कितनी बार समझाया था कि बेटे या बेटी का इस्तिहार इंसान के हाथ में नहीं जो खुदा चाहे अता करे लेकिन वह अपनी मां और बहनों की बातों में आकर सोसन ही को कुसूरवार ठहराते थे। बी अम्मा कहा करती हैं, “शायद खुदा को यही मंजूर है कि तुम बेटियों वाले बाप कहलाओ। लेकिन याद रखो! बेटियां खुदा की रहमत हैं। मैं तुम्हें ऐसे सैकड़ों घरानों की मिसाल दे सकती हूँ जिनकी बेटियां बेटों से लाख दर्जे बेहतर हैं। देखो शुजा! बेटा-बेटा की रट लगा कर खुदा की रहमत को मत झुटलाओ। उसे नाराज़ करके अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा न करो। फ़र्ज़ करो! अगर खुदा तुम्हें एक बीमार और अपाहिज बेटा अता करे तो तुम क्या करोगे? शुक्र करो कि मालिक ने सही व सालिम और सेहतमंद बेटियां दी हैं”

“बस कीजिए! बी अम्मा, बस कीजिए! मैं कमज़ोर हूँ जो कोई मोहताज या अपाहिज बेटा पैदा होगा? और अगर हुआ भी तो मैं उसकी परवरिश करूंगा। उसकी देखभाल करूंगा। आप क्यों मुझसे मेरी तमन्नाएं छीनने पर तुली हुई हैं।”

बी अम्मा जब देखती कि उनकी बातों का शुजा अली पर कोई असर नहीं हो रहा है तो वह सोसन को तसल्लियां देने लगतीं। सोसन बेचारी रोते



# ताज़ा फूल

दुनिया एक गुलिस्तान है और इसमें मौजूद हर फूल की अपनी एक अलग कहानी है लेकिन कभी कभार यह एक दूसरे से जुदा नहीं रहते बल्कि एक ही दास्तान के अलग-अलग कैरेक्टर बन जाते हैं। अगर गौर करें तो हम भी उन्हीं में से किसी दास्तान का एक हिस्सा साबित हो सकते हैं।

मैंने बी अम्मा के साथ रहते हुए कई दास्तानों को देखा है और अक्सर वक्तों में अपने आपको उसी दास्तान का एक पार्ट और किस्दार समझने लगता था।

मुझे याद है कि मैं नहाने से बहुत डरता था। नहीं, नहीं! आप ग़लत समझे। ऐसा नहीं था कि मुझे सफ़ाई-सुथराई पसंद नहीं थी या मैं गंदगी को पसंद किया करता था। बात सिर्फ़ इतनी सी थी कि मैं जैसे ही बाथरूम में घुसता था तो बी अम्मा फ़ौरन ही आ धमकती थीं और फिर मेरी रगड़ाई शुरू हो जाती थी। मैं चीख-चीख कर मदद के लिए पुकारता था लेकिन मजाल है जो उस बुरे वक्त में कोई मेरी मदद करे। बी अम्मा मुझे ऐसे नहलातीं जैसे जली हुई हांडी मांझ रही हों और फिर बहुत जल्द वह वक्त भी आता जब वह मुझे बड़े से तौलिए में लपेटे गोद में उठाकर बाहर ले आतीं। अगर गर्मियों के दिन होते तो ताज़ा फूलों के जूस का भरा ग्लास और अगर सर्दियां होतीं तो गर्म-गर्म दूध का कप बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा होता था। बी अम्मा के हाथ से दूध या जूस पीकर नहाने के सारे ग़म भुला बैठता और बी अम्मा यूँ मेरी बलाएँ लेतीं जैसे मैं परियों का शहज़ादा हूँ या दूल्हा बना स्टेज पर बैठा हूँ।

बी अम्मा की एक जानने वाली थीं। आपा सफ़िया। उनका एक बेटा





हुए कहती, “मैंने कितनी बार डाक्टरों से कहा है कि खुदा के लिए कुछ कर दें कि अबकी बार मेरे यहां बेटा पैदा हो लेकिन वह हमेशा हंस कर टाल देती हैं। आखिर मैं क्या करूं? शुजा को कैसे समझाऊं? अम्मा अगर इस बार बेटा न हुआ तो वह मुझे तलाक दे देंगे। आखिर मैं इन बेटियों को लेकर कहां जाऊंगी? मैं क्या करूं? कहां जाऊं? कहां से बेटा लेकर आऊं?”

बी अम्मा भी उसके लिए बहुत परेशान थीं लेकिन वह भी क्या करतीं। एक दिन बी अम्मा बैठी हुई अखबार पढ़ रही थी कि उनके चेहरे पर खुशी और जोश के आसार नज़र आने लगे। उन्होंने उसी वक़्त शुजा का नम्बर मिलाकर उसे अपने घर आने को कह दिया।

जब शुजा अली आए तो बी अम्मा ने हाल-चाल पूछने के बाद अखबार उनके हाथ में थमा दिया और बोली, “लो इसे पढ़ लो और देखो कि बेटा न होने में औरत का कोई कुसूर नहीं होता बल्कि इसका तअल्लुक मर्द से है। इतने में तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूँ।”

यह कहकर बी अम्मा कमरे में शुजा को अकेला छोड़कर बाहर निकल आईं। जब चाय लेकर बी अम्मा कमरे में गईं तो शुजा सोच में डूबे हुए बैठे थे। “अब तो तुम ने खुद पढ़ लिया कि बेटा न होने में सोसन का कोई कुसूर नहीं है।”

“आप ठीक कहती हैं बी अम्मा! मैं मान गया कि कुसूर सोसन का नहीं है लेकिन मैं मजबूर हूँ। मुझे हर हाल में बेटा चाहिए क्योंकि मेरी अम्मी को तो आप जानती ही हैं। उनकी एक ही रट है कि मुझ पोता चाहिए।” शुजा ने सारा कुसूर अपनी मां पर डाल दिया। हांलाकि यह बात बी अम्मा अच्छी तरह जानती थी कि वह खुद भी यही चाहता था। वैसे वह एक अच्छा इंसान था लेकिन फिर भी आस-पास के माहौल को देखकर

वह भी उसी ख्वाहिश में बह गया था।

“बी अम्मा आपको कसम है! कुछ कीजिए ताकि बेटा पैदा हो जाए। आप नेक औरत हैं खुदा आपकी दुआ जल्दी कुबूल करेगा।” यह कहकर शुजा उठ कर चला गया।

वक़्त गुज़रता गया और लोगों ने देखा की सोसन एक बार फिर उम्मीद से है। लोगों की निगाहें उस पर लगी हुई थीं क्योंकि शुजा अली ने इस बार साफ-साफ कह दिया था कि अगर इस बार भी बेटा पैदा हुई तो मैं सोसन को तलाक दे दूंगा। जैसे-जैसे पैदाइश का वक़्त पास आता जा रहा था सोसन समेत तमाम लोगों के दिल की धड़कनें तेज़ होती जा रही थीं।

और फिर छठी बार बेटा की खबर ने सबको हिलाकर रख दिया। इस बार तो शुजा अली की मां-बहनों ने सोसन और बच्चियों का सामान बांधना भी शुरू कर दिया था। क्योंकि उनके एतेबार से अब सोसन और उसकी बच्चियों के लिए उस घर में कोई जगह नहीं थी। ज़ाहिर है कि सोसन तलाक के बाद यहां कैसे रह सकती थी?

शुजा अली बेटा की खबर सुनकर अस्पताल ही नहीं आए। इसलिए सोसन की हालत बहुत अजीब थी। जब वह अपनी नई पैदा हुई बच्ची को देखती तो उसकी आंखों में मामता की चमक आ जाती लेकिन जब उसे याद आता कि अब शायद वह कभी अपने घर नहीं जा सकेगी तो उसके आंसू बहने लगते थे। बहेरहाल वह अपने अंजाम के इतिज़ार में थी।

इधर बी अम्मा को भी मालूम हो गया था कि शुजा अली अपनी बच्ची को देखने भी नहीं गया है। इसलिए वह बहुत तेज़ी के साथ शुजा अली की तलाश में थीं क्योंकि वह जानती थीं कि अगर उन्होंने जल्द ही शुजा को समझाया नहीं तो वह कहीं सोसन को तलाक दे ही न दे। वह चाहती थी कि सोसन के घर आने से पहले ही वह शुजा अली को समझाने की कोशिश करें। उन्होंने कई बार उसे फ़ोन किया लेकिन वह साहब न मिल सके।

बी अम्मा हर नमाज़ के बाद सोसन के लिए दुआ भी करती थीं लेकिन लगता था अब की बार उसका नसीब उसे बदनसीब करके ही छोड़ेगा।

उन दिनों गर्मियों की छुट्टियां थीं और घरों में सफ़ाई-सुथराई का काम चल रहा था। कल मेरी अम्मी ने भी घर की सफ़ाई की थी। पुरानी चीज़ें उन्होंने कबाड़िये को दे दीं और साथ ही मेरे और बाकी भाई बहनों के पुराने छोटे-बड़े कपड़े निकाल कर गठरी बना कर मुझे दे दिए ताकि मैं उन्हें बी अम्मा तक पहुंचा दूँ। अम्मी जानती थीं कि बी अम्मा ऐसे बहुत से लोगों को जानती हैं जिन्हें उन पुराने कपड़ों की ज़रूरत है। जब मैं बी अम्मा के घर पहुंचा तो वह भी सफ़ाई में लगी हुई थीं। बी अम्मा ने भी अपने घर के ढेर सारे पुराने कपड़े निकाले हुए थे जो थे तो अच्छी हालत में लेकिन सब छोटे हो चुके थे। बी अम्मा थकन से चूर हो गई थीं। उन्होंने मुझे रात अपने पास ही रोक लिया। दूसरे दिन मैं और बी अम्मा दोनों ने टैक्सी करके सारे कपड़े डिग्गी में डाले और यतीमखाने की तरफ़ चल पड़े। टैक्सी तेज़ी से चल रही थी या शायद उड़ रही थी कि अचानक बी अम्मा ने चिल्लाना शुरू किया, “रोको! रोको, एक मिनट ठहरो!” ड्राइवर ने धबराकर तेज़ी से ब्रेक लगाए और उसके रुकते ही बी अम्मा यह कह कर तेज़ी से रोड पर पीछे की तरफ़ जाने लगीं कि तुम यहीं ठहरो मैं अभी आती हूँ।” मैं हैरान परेशान खिड़की से बाहर झांकने लगा। ड्राइवर भी पीछे मुड़कर देख रहा था।

कुछ दूर जाकर बी अम्मा फुटपाथ के पास रुक गईं और वहां पेड़ से टेक लगाए खड़े हुए एक शख्स से बातें करने लगीं। मैं हैरान था कि इस अंजान जगह पर बीच रास्ते में उन्हें कौन मिल गया। मुझे लगा जैसे बी अम्मा उस आदमी को अपने साथ आने को कह रही हैं और वह मना कर रहा है।

धीरे-धीरे ड्राइवर के सब्र का पैमाना टूटने लगा। थोड़ी देर बाद उसने





टैक्सो को रिवर्स गैयर में लगाया और बी अम्मा के सामने जाकर गाड़ी रोक दी। फिर खिड़की की तरफ मुंह करके चिल्लाया, “अम्मा जी! ऐ मां जी! अम को देर होता है, किराया दे दो अम जाए।”

बी अम्मा की पीठ हमारी तरफ थी इसलिए वह ड्राइवर की बात न सुन सकी। वैसे उनके साथ खड़ा आदमी समझ गया और फिर वह बी अम्मा के साथ ही सर झुकाए हमारी तरफ आने लगा। कुछ कदम आगे आने पर मैंने उसे पहचान लिया। यह शुजा अली थे जिसकी बी अम्मा को कई दिन से तलाश थी। वह आगे बैठ गए और बी अम्मा मेरे साथ पीछे।

टैक्सो एक बार फिर चल पड़ी। रास्ते में हमारे बीच कोई बात नहीं हुई। मुझे ऐसा लग रहा था कि जैसे बी अम्मा दुआ कर रही हों और कह रही हों, “ऐ मेरे पवरदिगार मुझे कोई रास्ता सुझा दे कि मैं एक घर उजड़ने से बचा सकूँ।”

कुछ ही देर बाद हम लोग यतीम खाने पहुंच गए। वहां पहुंचते ही मैंने और शुजा ने कपड़ों की गठरी और दूसरा सामान डिग्गी से निकाला और उसे जमा कराने के लिए काउंटर की तरफ बढ़े। बी अम्मा ने भी तमाम कपड़े, पैसे और ज़रूरत की दूसरी चीजें वहां जमा करवा कर रसीद ले ली।

फिर वापस आने के बजाए झुक कर काउंटर पर मौजूद शख्स से कुछ बात करने लगीं। यह देखकर मैं हैरान और शुजा अली परेशान हो रहे थे। एक आध-मिनट बातचीत के बाद बी अम्मा सीधी खड़ी हुई और बताया कि चलो अंदर चलते हैं और मरीजों को देखते हैं। मैंने इजाज़त ले ली है।

काउंटर पर मौजूद आदमी ने हम तीनों को यतीम खाने के उस हिस्से में पहुंचा दिया जहां बीमार और अपाहिज बच्चे रहते थे। मेरा ख्याल है कि बी अम्मा ने जानबूझ कर उस हिस्से को चुना था क्योंकि वहां मौजूद तमाम मासूम और माजूर बच्चे, लड़के थे। बी अम्मा एक-एक से हाथ मिलातीं, उन्हें प्यार करतीं और उनके सर पर शफ़क्कत से हाथ फेरतीं।

मैं अक्सर बी अम्मा के साथ यतीम खाने आया था लेकिन अंदर जाने का यह पहला मौका था। मेरी आंखों में भी आंसू आ गए थे। मैं बच्चों की माजुरी देखकर गुमज़दा था क्योंकि उनमें से ज़्यादातर बच्चे ऐसे थे जिनके घर वाले खुद उन्हें छोड़ गए थे और दोबारा उनको पूछने भी नहीं आए थे। शुजा का हाल भी कुछ अच्छा नहीं था। बल्कि वह तो मुझसे भी ज़्यादा परेशान नज़र आ रहा था।

सब बच्चों से मिलने के बाद बी अम्मा ने शुजा अली से कहा, “तुम्हारे ख्याल में इस तरह का मोहताज, बीमार और अपाहिज बेदा बेहतर है या सही सालिम और सेहतमंद बेटी?”

शुजा का सर झुकता चला गया। हम लोग बस में बैठकर वापस घर आ गए। बी अम्मा शुजा अली को भी अपने साथ घर ले आईं। खाना खाने के दौरान भी उसे समझाती रहीं। फिर आखिर में कहा, “सोसन को आज अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। जाओ उस नेमत पर अल्लाह का शुक्र अदा करो। अपनी बच्ची को भी प्यार करो और सोसन को भी घर ले जाओ।”

रात को शुजा अली अपने घर पहुंचे तो अकेले नहीं थे बल्कि हाथ में वह बास्केट थी जिसमें बच्चे के कपड़े अस्पताल ले जाए गए थे। उनके पीछे सोसन भी हलके-हलके कदमों से चली आ रही थी। उन्हें देखते ही उनकी मां वारी सदके होनी लगी। बहने लड़कियां गिनवाने लगीं कि सोसन की तलाक के बाद किससे शादी करवाएंगी। ऐसा लग रहा था कि सारी तैयारियां पहले ही से पूरी कर ली गई हैं। मां कह रही थी, “अब देखना ऐसी बहू लाऊंगी जो बेटों पर बेटे घर में लेकर आएगी।”

सोसन का सामान बंध रहा था। शुजा अली सर झुकाए खामोशी से

सुनते रहे। जब मां बहनें सब कुछ कह चुकीं तो धीरे से बोले, “अम्मी! यह क्या है?” इशारा सोसन के बंधे हुए सामान की तरफ था।

“अरे यह इसी कलमुही का सामान है। चल अब इसे दफ़ा कर। और इसके अम्मा अब्बा से कह दे कि आकर इसे ले जाएं। हमने इसका सारा सामान बांध दिया है।” शुजा की अम्मी ने किसी भी चीज़ का लिहाज़ किए बग़ैर बोलना शुरू कर दिया।

“सोसन के साथ मेरा सामान भी बांध दीजिए अम्मी! जिस घर में बेटियों की शक्ल में उतरने वाली खुदा की रहमत का शुक्र अदा न किया जाता हो मैं वहां रहकर क्या करूंगा! अफ़सोस अम्मी! मैंने बेटे की खातिर सोसन पर बहुत जुल्म किया है। लेकिन खुदा भला करे बी अम्मा का आज उन्होंने मेरी आंखें खोल दी हैं।”

“एक बात कान खोल कर सुन ले शुजा! इस घर में सोसन के लिए कोई जगह नहीं है। हमने फ़ैसला कर लिया है कि सोसन अब इस घर में नहीं रहेगी।” आपा सफ़िया शेर की तरह दहाड़ी।

“ठीक है अम्मी तो फिर मैं भी सोसन को और अपनी बेटियों को लेकर यहां से जा रहा हूँ।” और यूँ शुजा अली अपनी बच्चियों को और सामान लेकर घर से निकल गए। मां-बहनों की आंखें हैरत से फटी हुई थीं। उन्हें होश उस वक़्त आया जब दांतों में दबी हुई उंगलियों में सख़्त तकलीफ़ होने लगी। ●







दुनिया में कौन आगे नहीं बढ़ना चाहता ? कौन तरक्की नहीं करना चाहता ? लेकिन तरक्की यूं ही नहीं मिल जाती। इसके लिए आप में होना चाहिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना, कोई मकसद, कोई विज़न, कोई आइडिया। अगर आपके पास ऐसा कोई गोल नहीं है, तो फिर अपने घर में बैठिए। और अगर आपका जवाब हां है, तो अपनी सलाहियत को पहचानिए और अपने काम में जुट जाइए...।

बिल गेट्स दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से हैं। उनकी खास बात यह है कि वह अमीर होने के साथ-साथ दिल वाले भी हैं और जहां ज़रूरत होती है वहां पैसे से मदद भी करते हैं। 28 अक्टूबर 1955 को उनकी पैदाईश हुई थी, लेकिन 32 साल पूरे होने के पहले ही 1987 में उनका नाम अरबपतियों की फोर्ब्स की लिस्ट में आ गया था और कई साल तक वह इस लिस्ट में नंबर वन पर भी रहे। 2007 में उन्होंने 40 अरब डॉलर (लगभग 176 अरब रुपये) दान में दे दिए। बिल गेट्स माइक्रोसॉफ्ट के चेयरमैन हैं, जिसका साल 2010 का कारोबार 63 अरब डॉलर और मुनाफा करीब 19 अरब डॉलर था। आखिर क्या है बिल गेट्स की कामयाबी का राज?

#### हाई-थिंकिंग

बिल गेट्स खाते-पीते घर के हैं। स्कूल में उन्होंने 1600 में से 1590 नंबर पाए थे, पढ़ाई के दौरान ही कंप्यूटर प्रोग्राम बनाकर उन्होंने 4200 डॉलर कमा लिए थे और टीचर से कहा था कि मैं 30 वर्ष की उम्र में करोड़पति बनकर दिखाऊंगा और 31 की उम्र में वह अरबपति बन गए थे। डेढ़ एकड़ के उनके बंगले में सात बेडरूम, जिम, स्विमिंग पूल, थिएटर वगैरा सभी कुछ है। पंद्रह साल पहले इस बंगले को करीब 60 लाख डॉलर में खरीदा था, उन्होंने लियोनार्डो दा विंची के लैटर्स/राइट-अप्स को तीन करोड़ डॉलर में खरीदा था।

ब्रिज, टेनिस और गोल्फ के खिलाड़ी बिल गेट्स अपने तीन बच्चों के लिए पूरी जायदाद छोड़कर नहीं जाना चाहते, क्योंकि उनका मानना है कि अगर मैं अपनी दौलत का एक परसेंट भी उनके लिए छोड़ दूँ, तो वह काफी होगा। उन्होंने दो किताबें भी लिखी हैं, 'द रोड अहेड' और 'बिज़नेस@स्पीड ऑफ़ थॉट्स'।

# मेरी कामयाबी में साथियों का हाथ बिल गेट्स





MICROSOFT



MICROSOFT

साल 1994 में उन्होंने अपने काफी शेयर्स बेच दिए और एक ट्रस्ट बना दिया, जबकि 2000 में उन्होंने अपने तीन ट्रस्टों को मिलाकर एक कर दिया और पूरी ट्रांसपैरेंसी के साथ दुनिया भर के ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने लगे। बिल गेट्स की कमाई, वन-मेन शो और मुकाबले की चाह उन्हें बार-बार चर्चाओं में भी ढकेलती रही है। 16 साल तक अरबपतियों की फोर्ब्स की लिस्ट में नंबर वन रह चुके बिल गेट्स अपनी कामयाबी के उसूल इस तरह बताते हैं :-

#### दुनिया बदलिए या घर बैठिए

क्या आपमें है कुछ कर गुज़रने की तमन्ना? क्या आपके पास है कोई मकसद, कोई विज़न, कोई आइडिया, कोई इनोवेशन? अगर आप में ऐसा कुछ नहीं है, तो अपने घर बैठिए और अगर आपका जवाब हाँ है, तो अपनी सलाहियत को आँकिए और अपने काम में जुट जाइए।

#### रास्ते खुद बनाइए

आज जो भी रास्ते हैं, वे हमेशा से नहीं थे। किसी न किसी ने तो उन्हें बनाया ही है। नए रास्ते बनाने की कोशिश पर हो सकता कि लोग आपको सनकी कहें, लेकिन आप अपनी डगर से हटिए मत। जब मैंने हर डेस्क पर और हर घर में कम्प्यूटर के बारे में सोचा था, तब किसी ने इस बारे में सोचा भी नहीं था। मुझे भरोसा था कि कम्प्यूटर हम सबकी जिंदगी को बदलकर रख देंगे।

#### उसूलों पर डटे रहिए

कभी भी अपने उसूलों से मत हटिए। याद रखिए, सभी लोग सिर्फ़ पैसे के लिए काम नहीं

करते। मेरे साथ जितने भी लोगों ने काम शुरू किया था, वह सभी जानते थे कि वह पैसा कमाने के लिए नहीं, लोगों की जिंदगी बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। हम टेक्नोलॉजी की मदद से लोगों की जिंदगी आसान बनाना चाहते थे, और वह हमने कर दिखाया। यह पैसा कमाने से ज़्यादा बड़ा काम है। उनकी हमेशा मदद कीजिए, जिनके पास रिसोर्सेस नहीं हैं।

#### हमेशा आगे की सोचिए

दुनिया तेजी से बदल रही है। अगर आप आगे की नहीं सोच सकते, तो पिछड़ जाएंगे। आपको संभलने का वक़्त ही नहीं मिल पाएगा। आपको खेल में आगे आने के लिए और यहां तक कि खेल में बने रहने के लिए भी आगे की बातें सोचनी होंगी। इसके लिए कड़ी मेहनत के साथ ही बाज़ार की ज़रूरतें क्या-क्या रहेंगी, यह जानना ज़रूरी है।

#### आपका बेस्ट तभी, जब सही लोग हों

कोई भी सलाहियत या स्किल किसी काम को सही अंजाम तभी दे सकती है, जब उसे सही लोगों का साथ मिले। अगर आपमें बहुत सलाहियत है, लेकिन आपके साथ काम करने वाले आपका साथ न दें, तो नतीजा क्या होगा? ऊंचे गोल को लेकर बेस्ट सलाहियत से काम करने वाले लोग ही कामयाबी पा सकते हैं। अगर मेरे साथ पल एलेन और स्टीव बाल्मेर जैसे बा-सलाहियत और ज़बरदस्त साथी और काम करने वाले नहीं होते, जो मेरी कमियों को दूर कर देते थे, तो आज मैं इस जगह नहीं पहुंच पाता।

#### सिस्टम बनाइए

कोई भी काम करने के लिए एक सिस्टम ज़रूरी है, जिससे कि सारे काम आसानी से हो सकें। यह सिस्टम माइक्रो या मैक्रो हो सकता है। ज़रूरी नहीं कि आप ही सिस्टम बनाएं, आप कोई भी अच्छा सिस्टम अपना सकते हैं, लेकिन यह ध्यान रखिए कि कहीं यह सिस्टम आपके काम को तो नहीं बिगाड़ रहा है और आपको आपके गोल से दूर तो नहीं कर रहा है?

#### मुश्किल को टुकड़ों में हल कीजिए

अगर कोई मुश्किल एक झटके में दूर न हो सके, तो ऐसे में उसे टुकड़ों में बांटकर हल किया जा सकता है। इस तरीके से बड़ी से बड़ी और ख़तरनाक से ख़तरनाक मुश्किलों से भी छुटकारा पाया जा सकता है।

#### नाकामी को भी मत भूलिए

अपनी हर कामयाबी का जश्न ज़रूर मनाइए, जिससे आपको अपनी कामयाबी पर नाज़ हो और आप हर कामयाबी को पाना चाहें, लेकिन कभी भी अपनी नाकामी को भी मत भूलिए। अपनी नाकामी से सबक सीखिए और उसे दोहराइए मत।

#### अपने लोगों का ध्यान रखिए

याद रखिए! टेक्नोलॉजी सिर्फ़ एक टूल है, काम लोग ही करते हैं, इसलिए अपने सभी साथियों और कैंलीग्स का ध्यान रखना ज़रूरी है। उन्हें कुछ अधिक अधिकार देकर आप और ज़्यादा जिम्मेदार भी बना सकते हैं। ●







# **GULSHAN**

## **MEHANDI & HERBALS**

**IRFAN ALI PRADHAN**

*403 & 404, A Block*

*REGALIA HEIGHTS*

*Ahmadabad Palace Road*

*KOHE-FIZA*

*BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.*

*+919893030792, +917554220261*

**MOHTARMA "GULSHAN"**

*G-1, Krishna Apartment*

*Plot No. 2, Firdaus Nagar*

*Bairasia Road, BHOPAL*

*+91-755-2739111*



# मरयम

का एक साल पूरा होने के मौके पर

हम आपके घर लेकर आ रहे हैं खूब सूरत और कीमती

- पहला इनाम : उमरा  
दूसरा इनाम : फ्रिज  
तीसरा इनाम : माइक्रोवेव  
चौथा इनाम : मोबाईल सेट  
पांचवां इनाम : डिनर सेट  
छटा इनाम : ज्वैलरी  
सातवां इनाम : मिक्सर  
आठवां इनाम : पंखा  
नवां इनाम : लेमन सेट  
दसवां इनाम : घड़ी

## तोहफ़े



नवम्बर 2011 से मरयम में हर महीने एक कूपन छपेगा।  
10 कूपन जमा करके मरयम की तरफ से दी जाने वाली आखिरी तारीख तक कूपन भेजने वालों में से ड्रॉ के ज़रिए 10 लोगों को सिलेक्ट करके इनाम दिए जाएंगे।  
अगर आप मरयम के सब्सक्राइबर नहीं हैं तो जल्दी कीजिए।  
खुद भी सब्सक्राइब कीजिए और अपने रिश्तेदारों व दोस्तों को भी सब्सक्राइब कराईए और इस स्कीम से फ़ायदा उठाने का मौका हाथ से मत जाने दीजिए!



### नियम व शर्तें:

1. मरयम में हर महीने अलग-अलग तरह के कूपन छापे जाएंगे। अक्टूबर 2011 से सितम्बर 2012 तक 10 कूपन जमा करके भेजने वालों को ही इस ड्रॉ में शामिल किया जाएगा।
2. मरयम की टीम का फैसला ही आखिरी होगा और इस बारे में किसी को कोई एपेराज़ का हक नहीं होगा।
3. इस सिलसिले में किसी भी तरह की अदालती कार्यवाई सिर्फ़ लखनऊ की अदालत में ही की जा सकेगी।

Contact No.:

+91-522-4009558

+91-9956620017

+91-9695269006

maryammonthly@gmail.com